



भारतीय नौसेना को बहु-क्षेत्रीय बल बनाने के लिए एआई और लेजर तकनीक पर जोर-वाइस एडमिरल अजय कोचर

नयी दिल्ली १९/१० (संवाददाता): नौसेना उपप्रमुख वाइस एडमिरल अजय कोचर ने सोमवार को कहा कि नौसेना एक 'बहु क्षेत्रीय नेटवर्क बल' बनने के लिए हवा और पानी के भीतर से लेकर एआई तथा क्वांटम प्रौद्योगिकी तक, सभी क्षेत्रों में विकास पर काम कर रही है। कोचर ने यहां 'स्वावलंबन 2026' से पहले आयोजित एक प्रेसवार्ता में हाल के संघर्षों से नौसेना द्वारा प्रौद्योगिकी अपनाने के मामले में सीखे गए सबक का भी जिक्र किया। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि नौसेना 'निर्देशित-ऊर्जा अस्त्र प्रणाली' हासिल करने के तरीकों पर विचार कर रही है, जिसका इस्तेमाल सस्ते ड्रोन को गिराने के लिए किया जा सकता है। अप्रैल में, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने लेजर-निर्देशित ऊर्जा अस्त्र प्रणाली का सफल परीक्षण किया था। इसके साथ ही, भारत उन चुनिंदा देशों



के समूह में शामिल हो गया है, जिनके पास दुश्मन के ड्रोन और मानवरहित विमानों को मार गिराने में सक्षम ये आधुनिक हथियार मौजूद हैं। यह पूछे जाने पर कि कौन से नए युद्धपोत या अन्य प्लेटफॉर्म शामिल किए जाने की उम्मीद है, नौसेना उपप्रमुख ने कहा, "हमारे 42 प्लेटफॉर्म ऑर्डर पर हैं। इसके अलावा, 78 प्लेटफॉर्म और 120 एफआईसी (फास्ट इंटरसेप्टर क्राफ्ट) हैं, जिनकी कुल अनुमानित कीमत 1.41 लाख करोड़ रुपये है। इनके

लिए आवश्यकता स्वीकृति मिल चुकी है, और ये खरीद प्रक्रिया के अलग-अलग चरणों में हैं।" नौसेना 26 अक्टूबर को यहां मानकशां सेंटर में अपने प्रमुख सेमिनार के पांचवें संस्करण की मेजबानी करेगी। वाइस एडमिरल कोचर ने कहा, "हमारा सामूहिक लक्ष्य एक ही है - भारत की प्रौद्योगिकी प्रतिभा और क्षमताओं को नौसेना की अभियानगत जरूरतों के करीब लाना, और स्वदेशी नवाचार को समुद्र में

व्यावहारिक क्षमताओं में बदलना।" पश्चिम एशिया के मौजूदा हालात और उभरते संघर्ष के बीच समुद्री हितों की रक्षा में नौसेना की भूमिका के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, "जारी संकटों ने हमें सोचने और तैनाती, दोनों ही स्तरों पर व्यस्त रखा है।" उन्होंने नौसेना के 'ऑपरेशन ऊर्जा सुरक्षा' का भी उल्लेख किया, जिसने महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों पर हो रहे हमलों के बीच कई जहाजों को सुरक्षित रूप से भारतीय तटों तक पहुंचाने में मदद की है। हाल के संघर्षों से प्रौद्योगिकी अपनाने के संदर्भ में मिले सबक के बारे में पूछे गए एक सवाल पर कोचर ने कहा कि इन संघर्षों ने उन बदलावों को सामने ला दिया है जिन्हें सेना को अपनाना और आत्मसात करना चाहिए; जैसे कि युद्ध में स्वायत्त प्रणाली और कृत्रिम मेधा (एआई) का इस्तेमाल। उन्होंने कहा, "अगर हम भविष्य की ओर देखें, तो

इसमें यूएसएस (मानवरहित विमान प्रणाली) रोधी और क्वांटम प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल भी शामिल है-एक ऐसा क्षेत्र जो आने वाले समय में बहुत जल्द सामने आएगा। हम इन सभी बातों से पूरी तरह अवगत हैं।" पश्चिम एशिया की स्थिति के बीच भारतीय नौसेना की सीधी भूमिका पर उन्होंने कहा, "हमारे समुद्री हित हमारी सीमाओं से कहीं आगे तक फैले हुए हैं इसलिए, इन समुद्री हितों को सुरक्षित रखना और इनकी रक्षा करना भारतीय नौसेना का काम है।" कोचर ने यह भी कहा कि केवल संघर्ष ही नौसेना के भविष्य को तय नहीं करते। उन्होंने नौसेना के लिए प्रौद्योगिकी के महत्व पर जोर दिया। वर्ष 2022 में स्वावलंबन के पहले संस्करण में लगभग 800 प्रतिभागी शामिल हुए थे, और पिछले चार वर्षों में इसका विस्तार हुआ है, जिससे पिछले साल इसमें लगभग 3,000 प्रतिभागी जुड़े।



नयी दिल्ली १९/१० (संवाददाता): पोलैंड के प्रधानमंत्री डोनाल्ड टस्क 21 से 23 अक्टूबर के बीच भारत के दौरे पर आएंगे। इस दौरान वह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ द्विपक्षीय बातचीत करेंगे। विदेश मंत्रालय (एमईए) ने सोमवार को यह जानकारी दी। मंत्रालय ने कहा कि यह दौरा भारत-यूरोपीय संघ (ईयू) रणनीतिक साझेदारी को और गहरा करने में मददगार साबित होगा। पोलैंड के प्रधानमंत्री के तौर पर टस्क की यह भारत की दूसरी यात्रा होगी; इससे पहले वे 2010 में अपने पिछले कार्यकाल के दौरान भारत आए थे। विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि मोदी के निमंत्रण पर आ रहे पोलैंड के प्रधानमंत्री के साथ विज्ञ एवं अर्थव्यवस्था मंत्री आंद्रेज डोमांस्की और एक बड़ा व्यापार प्रतिनिधिमंडल भी होगा।

उसने कहा कि टस्क 22 अक्टूबर को मोदी के साथ द्विपक्षीय बातचीत करेंगे। इस दौरान दोनों नेता द्विपक्षीय संबंधों के सभी पहलुओं की समीक्षा करेंगे। अगस्त 2024 में भारतीय प्रधानमंत्री की पोलैंड यात्रा के दौरान इन संबंधों को 'रणनीतिक साझेदारी' के स्तर तक बढ़ाया गया था।

सौरभ दास और आशुतोष रांका की जमानत खारिज, कोर्ट ने दो दिन बढ़ाई कस्टडी

नयी दिल्ली १९/१० (संवाददाता): कॉंग्रेस जनता पार्टी के नेताओं आशुतोष रांका और सौरव दास की न्यायिक हिरासत को एक विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेट ने दो दिन के लिए बढ़ा दिया है। वहीं, उनकी कानूनी टीम ने रिकॉर्ड पर जमानतदार पेश करते हुए उनकी रिहाई की मांग की थी। मंदिर मार्ग पुलिस स्टेशन, जहाँ आज CJP के नेताओं सौरव दास और आशुतोष रांका को लाया गया था। आज उनकी जमानत याचिकाएं खारिज कर दी गईं। उनके वकील का कहना है कि इस मामले की सुनवाई कल होगी। अधिवक्ता धर्मवीर ने कहा कि आज उनकी जमानत अर्जियां खारिज कर दी गईं। उन्हें वापस न्यायिक हिरासत में भेज दिया जाएगा। मामले को कल फिर से सूचीबद्ध



(लिस्ट) किया जाएगा। कल इस मामले पर फैसला लिया जाएगा। जमानत बांड (श्योरिटी बॉन्ड) फिर से पेश करने होंगे। एक नया जमानत बांड पेश करने के बावजूद, सुरक्षा अधिकारी ने उसमें कुछ विसंगतियां (मिसमैच) बताईं। इस मामले में अगली सुनवाई 21 अक्टूबर को तय की गई है। छद्मकी कानूनी टीम ने विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेट के समक्ष एक आवेदन दायर कर दास और रांका को

न्यायिक हिरासत से रिहा करने की मांग की है। उन्हें शुरू में हिरासत में इसलिए भेजा गया था क्योंकि उनकी गिरफ्तारी के दिन उनके लिए जमानत देने वाले मौजूद नहीं थे। दास और रांका को 13 अक्टूबर को हिरासत में लिया गया और 14 अक्टूबर को पांच दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। उन्होंने दिल्ली के जंतर-मंतर में तब प्रवेश किया था, जब उसे विरोध-प्रदर्शन के

लिए निर्धारित जगह के रूप में अधिसूचित किए जाने का दर्जा वापस ले लिया गया था। छद्मकी नेताओं का कहना है कि उन्होंने वहां राष्ट्रीय ध्वज फहराया और नारे लगाए। शुरुआत में उन्हें पांच दिन की हिरासत में भेजने का आदेश दिया गया था, और अब ताजा फैसले के तहत इसे दो दिन और बढ़ा दिया गया है। CJP, मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) का विरोध कर रहा है। उनका आरोप है कि इस प्रक्रिया से मतदाताओं के अधिकारों को खतरा है। इस संगठन ने जंतर-मंतर को विरोध-प्रदर्शन के लिए तय जगह के रूप में दी गई मान्यता को रद्द करने का भी विरोध किया है। यह नया विस्तार ऐसे समय में आया है जब नेताओं की कानूनी टीम, जमानत राशि जमा करने के बाद उनकी रिहाई की कोशिश कर रही है। इस मामले की अगली सुनवाई 21 अक्टूबर को होनी है।

श्रीनगर १९/१० (संवाददाता): जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में स्थित माता वैष्णो देवी मंदिर में शारदीय नवरात्र के दौरान श्रद्धालुओं की भारी भीड़ रही और 11 अक्टूबर से अब तक 3.81 लाख से अधिक भक्त माता के दर्शन कर चुके हैं। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि दशहरे के अवसर पर श्रद्धालुओं की संख्या में और वृद्धि होने की संभावना है। मंदिर के आधार शिविर कटरा में मौसम साफ रहने और उत्सव का माहौल होने के बीच यात्रा सुचारू रूप से जारी है। एक विरिष्ठ अधिकारी ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया, "शारदीय नवरात्र के दौरान सोमवार दोपहर दो बजे तक 3.81 लाख श्रद्धालु त्रिकूटा पहाड़ियों पर स्थित माता वैष्णो देवी की पवित्र गुफा के दर्शन कर चुके हैं।" शारदीय नवरात्र वर्ष में मनाए जाने वाले दो प्रमुख नवरात्र उत्सव में से एक



है। दूसरा चैत्र नवरात्र है। शारदीय नवरात्र का आयोजन शरद ऋतु में सितंबर-अक्टूबर के दौरान होता है। अधिकारियों के अनुसार, नवरात्र के पहले आठ दिनों में 3.62 लाख श्रद्धालुओं ने माता के दर्शन किए, जबकि सोमवार को भी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने माता के दरबार में मत्था टेका। आंकड़ों के अनुसार, 11 अक्टूबर को कुल 47,574 श्रद्धालुओं ने माता के दर्शन किए। इसके बाद 12 अक्टूबर को 48,400 श्रद्धालुओं, 13 अक्टूबर को 46,558 श्रद्धालुओं, 14 अक्टूबर को 41,961 और 15 अक्टूबर को

हैं। मंदिर परिसर स्थित यज्ञशाला में प्रार्थनाओं और वैदिक अनुष्ठानों के साथ आयोजित नौ दिवसीय शतचंडी महायज्ञ सोमवार को नौवें दिन जारी रहा। माता के दरबार, यात्रा मार्ग और कटरा शहर को फूलों और रंग-बिरंगी रोशनी से सजाया गया है। यात्रा को सुरक्षित और सुचारू बनाए रखने के लिए कड़े सुरक्षा प्रबंध किए गए हैं। श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड ने दिव्यांग श्रद्धालुओं के लिए विशेष व्यवस्थाएं की हैं जिनमें निःशुल्क घोड़ा और बैटरी चालित वाहन सेवा, प्राथमिकता के आधार पर दर्शन तथा सहायता के लिए विशेष केंद्र शामिल हैं। इसके अलावा, यात्रा मार्ग पर पेयजल, स्वच्छता और चिकित्सा सहायता जैसी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। मार्ग के प्रमुख स्थानों पर आपातकालीन सहायता दल भी तैनात किए गए हैं।

एसआईआर पर जयराम रमेश ने उठाए सवाल, वोटर लिस्ट से नाम हटाने को बताया असंवैधानिक

नयी दिल्ली १९/१० (संवाददाता): कांग्रेस ने सोमवार को विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की प्रक्रिया को "अवैध और असंवैधानिक" करार देते हुए इसे तत्काल रोकने की मांग की और कहा कि मतदाता सूचियों से गलत तरीके से हटाए गए सभी मतदाताओं के नाम शामिल किए जाने चाहिए। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने 'एज्स' पर एक खबर का हवाला देते हुए दावा किया कि एसआईआर प्रक्रिया के दौरान हटाए गए मतदाताओं में बड़ी संख्या 'एससीडीडी' (अनुपस्थित, स्थानांतरित, मृत और डुप्लीकेट) श्रेणी की है और भाजपा तथा उसके "अनौपचारिक प्रवक्ता" इसे मतदाता सूचियों की 'सफाई' बताकर इस प्रक्रिया का बचाव कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि दिल्ली में नागरिक अधिकार संगठनों द्वारा किए गए एक सार्वजनिक ऑडिट में



'एससीडीडी' के नाम पर मतदाताओं के नाम गलत तरीके से हटाए जाने के मामले सामने आए हैं। कांग्रेस नेता के मुताबिक, महज दो मतदान केंद्रों पर कम से कम 100 ऐसे मतदाता मिले, जिनके नाम 'एससीडीडी' श्रेणी में गलत तरीके से हटा दिए गए और इनमें से ज्यादातर को 'स्थानांतरित' या 'अनुपस्थित' बताया गया था। रमेश ने दावा किया कि देश भर में केवल 'स्थानांतरित' और 'अनुपस्थित' श्रेणियों में नौ करोड़ से अधिक मतदाताओं के नाम हटाए गए हैं। उन्होंने सवाल किया कि

इनमें से कितने वास्तविक मतदाता हैं जिन्हें मतदान के अधिकार से वंचित किया जा रहा है? उन्होंने निर्वाचन आयोग की ओर से कथित तौर पर आयोजित किए जा रहे "विशेष शिविरों" और घर-घर जाकर सत्यापन किए जाने पर भी सवाल उठाया। रमेश ने दावा किया कि गलत तरीके से मतदाता सूची से हटाए गए कई लोगों को इन शिविरों की जानकारी नहीं है और न ही बूथ स्तर के अधिकारियों (बीएलओ) ने उनसे संपर्क किया है।

नयी दिल्ली १९/१० (संवाददाता): अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो मंगलवार से भारत की तीन दिवसीय यात्रा शुरू करेंगे और इस दौरान ऊर्जा, व्यापार एवं निवेश, रक्षा और महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों के क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने के साथ-साथ पश्चिम एशिया संकट पर विचारों का आदान-प्रदान किया जाएगा। इस साल रुबियो की यह दूसरी भारत यात्रा ऐसे समय हो रही है, जब दोनों देशों के संबंधों में लगातार तनाव बना हुआ है। इससे पहले मई में अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और विदेश मंत्री एस. जयशंकर के साथ बातचीत की थी। इसके अलावा, उन्होंने क्राइ देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक में भी हिस्सा लिया था। अमेरिका के



विदेश मंत्री के साथ कारोबारियों का एक बड़ा प्रतिनिधिमंडल भी आने की उम्मीद है। मंगलवार दोपहर मुंबई में जयशंकर और रुबियो के बीच होने वाली बैठक में भारत-अमेरिका व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा होने की उम्मीद है। विदेश मंत्रालय के अनुसार, रुबियो दोपहर दो बजेकर 15 मिनट पर छत्रपति शिवाजी महाराज अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरेंगे।

जयशंकर के साथ बैठक के अलावा, मुंबई में रुबियो के कार्यक्रमों में 26/11 के आतंकवादी हमले के मृतकों को श्रद्धांजलि देने के लिए ताज स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित करना भी शामिल है। उस हमले में छह अमेरिकी नागरिकों सहित 160 से अधिक लोगों की जान गई थी। अमेरिका के शीर्ष राजनयिक अमेरिकी स्वतंत्रता की 250वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित एक स्वागत समारोह में भी शामिल होंगे।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने पिछले सप्ताह कहा था, बातचीत में द्विपक्षीय सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों पर चर्चा होने की उम्मीद है, जिनमें ऊर्जा, व्यापार एवं निवेश, रक्षा, महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियां तथा आपसी हित के अन्य विषय शामिल हैं। दोनों पक्षों के बीच प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते और भी चर्चा होने की संभावना है। रुबियो बुधवार को गुजरात के जामनगर जाएंगे। भारत यात्रा से पहले रुबियो ने उज्बेकिस्तान में कहा कि अमेरिका, भारत के साथ व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने के "बहुत करीब" है। उन्होंने यह संकेत भी दिया कि रूसी तेल खरीदने के मामले में भारत को अमेरिकी शुल्क के मिली छूट का संबंध इस समझौते

को अंतिम रूप देने के फैसले से है। रुबियो ने कहा, "हम अभी भारत के साथ व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने की कोशिश कर रहे हैं। हम इसे पूरा करने के बहुत करीब हैं। इसलिए जब राष्ट्रपति राष्ट्रीय सुरक्षा के आधार पर शुल्क से छूट और इस तरह के अन्य मामलों पर फैसला लेते हैं, तो यह उन बातों में से एक है, जिन पर हम विचार करते हैं।" भारत और अमेरिका 2025 की शुरुआत से प्रस्तावित व्यापार समझौते पर बातचीत कर रहे हैं। इसका उद्देश्य शुल्क संबंधी मतभेदों को दूर करना, गैर-शुल्क बाधाओं को खत्म करना और दोनों देशों के बाजारों तक पहुंच बढ़ाना है। भारत अपने उत्पादों के लिए अमेरिकी बाजार में प्रतिस्पर्धी देशों की तुलना में अधिक अनुकूल शुल्क व्यवस्था चाहता है।



भारतीय मूल की नावि पिल्लै को नोबेल शांति पुरस्कार मिलने पर भारत क्यों नहीं दे रहा बधाई?

नयी दिल्ली १९/१० (संवाददाता): नोबेल शांति पुरस्कार मिलते ही ज्या किसी व्यक्ति के सारे पुराने बयान और विवाद भुला दिए जाने चाहिए? ज्या भारत सरकार का यह फर्ज है कि वह हर उस शख्स को बधाई दे, जिसने अंतरराष्ट्रीय सज्मान हासिल किया है, भले ही उसका भारत के प्रति रवैया कैसा भी रहा हो? यह सवाल इसलिए उठे रहे हैं ज्योंकि कांग्रेस नेता शशि थरूर और विश्लेषक तथा अर्बन नज्सल के रूप में देखे जाने वाले सी. उदय भास्कर इस बारे में नाराजगी व्यक्त कर रहे हैं कि भारत सरकार ने अब तक नावि पिल्लै को नोबेल शांति पुरस्कार मिलने पर बधाई ज्यों नहीं दी है? शशि थरूर, सी उदय भास्कर तथा उन जैसे कुछ और लोगों के तर्कों को देखकर तो यही लगता है कि कुछ लोगों के लिए भारत सरकार का हर फैसला गलत है और विदेशों से मिलने वाला हर सज्मान भारत के लिए सिर झुकाने का

आदेश बन जाता है। इस बीच, नावि पिल्लै के मामले में पूर्व विदेश सचिव कंवल सिञ्चल ने तथ्यों के साथ जो सवाल उठाए हैं, वे शशि थरूर और सी. उदय भास्कर जैसे लोगों को आईना दिखाने के लिए काफी हैं। सिञ्चल ने साफ कर दिया है कि किसी को नोबेल शांति पुरस्कार मिल जाने भर से भारत सरकार पर उसे बधाई देने की बाध्यता नहीं आ जाती। हम आपको बता दें कि पूर्व विदेश राज्य मंत्री शशि थरूर ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट किये गये संदेश में लिखा है कि छह दिन बीत गए और भारत सरकार ने बधाई नहीं दी। शशि थरूर के शब्दों में यह शर्मनाक फैसला है। लेकिन यहां सवाल उठता है कि ज्या किसी पुरस्कार विजेता की भारतीय मूल की पहचान ही उसके प्रति भारत सरकार के औपचारिक अभिन्नंदन का पर्यास आधार है? ज्या पुरस्कार विजेता का सार्वजनिक रिकॉर्ड, भारत के प्रति उसका रवैया और उसके

विवादास्पद वक्तव्य कोई मायने नहीं रखते? शशि थरूर को समझना होगा कि राष्ट्र की विदेश नीति भावनाओं के आवेग पर नहीं, विवेक और राष्ट्रीय हित के आकलन पर चलती है। हम आपको बता दें कि कंवल सिञ्चल ने याद दिलाया है कि संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त के रूप में 2008 से 2014 तक नावि पिल्लै ने भारत के मानवाधिकार रिकॉर्ड, कश्मीर, कथित सामूहिक कब्रों और गुमशुदगियों, सशस्त्र बल विशेषाधिकार अधिनियम (AFSPA), यौन हिंसा तथा जातिगत और लैंगिक भेदभाव जैसे मुद्दों पर भारत की आलोचना की थी। कंवल सिञ्चल का दूसरा सवाल और अधिक गंभीर है। उन्होंने एक्स पर लिखा है कि नावि पिल्लै ने अपने कार्यकाल में पाकिस्तान-प्रायोजित आतंकवाद की स्पष्ट निंदा नहीं की थी और 26/11 के मुंबई आतंकी हमलों के संदर्भ में पाकिस्तान का नाम



लेकर स्पष्ट निंदा करने से परहेज किया था। इसकी बजाय, उन्होंने आतंकवाद के बाद पड़ोसी देशों पर उंगली उठाने की प्रवृत्ति पर सवाल किया और घरेलू जिम्मेदारी पर जोर दिया। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि मुंबई में निर्दोष लोगों का खून बहाने वाले आतंकवाद के संदर्भ में ऐसी भाषा ज्या भारत की सुरक्षा संबंधी चिंताओं के प्रति पर्यास संवेदनशील थी? वहीं, सी. उदय भास्कर का रुख भी कम दिलचस्प नहीं है। वह पिल्लै को साहसी न्यायविद बताते हुए भारत सरकार के बधाई न देने पर

आश्चर्य जता रहे हैं और इसे सिद्धांतों के सज्मान से जोड़ रहे हैं। लेकिन उनसे पूछा जाना चाहिए कि सिद्धांतों की यह कसौटी आखिर एकतरफा ज्यों दिखाई देती है? जब भारत आतंकवाद के प्रायोजन, सीमा पार से होने वाली हिंसा और निर्दोष नागरिकों की हत्या का प्रश्न उठाता है, तब ज्या वही अंतरराष्ट्रीय नैतिकता उतनी ही दृढ़ता से लागू होती है? ज्या कानून और जवाबदेही की बातें केवल भारत को कटघरे में खड़ा करने के लिए हैं, या आतंकवाद को बढ़ावा देने वालों के लिए भी हैं? भास्कर जिस अंतरराष्ट्रीय

नियम-आधारित व्यवस्था की बात करते हैं, उसका समर्थन होना चाहिए। लेकिन नियम-आधारित व्यवस्था का अर्थ यह नहीं कि किसी देश की सुरक्षा चिंताओं को गौण कर दिया जाए। हम आपको यह भी बता दें कि कंवल सिञ्चल ने यह भी रेखांकित किया है कि पिल्लै अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय की न्यायाधीश रह चुकी हैं, जबकि भारत इस न्यायालय का सदस्य नहीं है। यह तथ्य अपने आप में उनके प्रति बधाई न देने का निर्णायक कारण नहीं है, लेकिन यह जरूर दिखाता है कि अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ भारत के संबंधों का अपना कानूनी और कूटनीतिक संदर्भ है। इसलिए हर अंतरराष्ट्रीय पद या पुरस्कार को भारत की स्वीकृति का स्वतः प्रमाण मान लेना गलत होगा। साथ ही यहां सबसे बड़ा सवाल थरूर और भास्कर से ही नहीं, बल्कि उस मानसिकता से है जो भारत सरकार को पहले दोषी ठहराती है और उसके बाद

तथ्यों की तलाश करती है। ज्या सरकार का हर असहमति वाला फैसला शर्मनाक है? ज्या किसी विदेशी मंच पर भारत की आलोचना करने वाला व्यक्ति अपने आप निष्पक्ष और महान हो जाता है? और ज्या भारतीय मूल का होना किसी व्यक्ति के सार्वजनिक आचरण पर सवाल उठाने से रोक देता है? थरूर स्वयं विदेश नीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों की समझ रखने वाले नेता हैं। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वह किसी मामले को केवल भावनात्मक अंतरराष्ट्रीयतावाद के चश्मे से न देखें। भास्कर से भी अपेक्षा है कि वह सिद्धांतों की बात करते समय आतंकवाद के प्रश्न पर समान कठोरता दिखाएं। देखा जाये तो किसी व्यक्ति के योगदान को नकारने या मानवाधिकारों के महत्व को कम करने की जरूरत नहीं है। जरूरत है दोहरे मानदंडों से बचने की। इसमें कोई दो राय नहीं कि कंवल सिञ्चल ने शोर का जवाब तथ्यों और कूटनीतिक

संदर्भ से दिया है। उन्होंने एक जरूरी प्रश्न उठाया है कि बधाई न देने पर सरकार को कटघरे में खड़ा करने से पहले ज्या यह नहीं देखना चाहिए कि संबंधित व्यक्ति का भारत के प्रति सार्वजनिक रुख ज्या रहा है?बहरहाल, सवाल उठाना कोई गलत काम नहीं है। परेशानी तब होती है, जब कुछ लोग हर मुद्दे पर भारत को कटघरे में खड़ा करते हैं, लेकिन भारत की सुरक्षा और हितों पर सवाल उठाने वालों से जवाब मांगने पर उन्हें बुरा लगने लगता है। अंतरराष्ट्रीय सज्मान अपनी जगह है, लेकिन देश का स्वाभिमान और राष्ट्रहित भी उतने ही जरूरी हैं। आखिर भारत हर बार दूसरों की कसौटी पर ही ज्यों खरा उतरे? उसे अपने हितों के हिसाब से फैसले लेने का भी पूरा अधिकार है। पूर्व विदेश सचिव कंवल सिञ्चल ने बस यही बात याद दिलाई है। इसलिए उनके सवालों को खारिज करने के बजाय उन पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

शिवराज सिंह का राहुल गांधी पर हमला, कहा- चुनाव न जीतने पर विपक्ष फैला रहा झूठ

नयी दिल्ली १९/१० (संवाददाता): केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 17 अक्टूबर को कांग्रेस नेता राहुल गांधी और विपक्ष की आलोचना की। उन्होंने उन पर जनता को भड़काने के लिए झूठ और अफवाहें फैलाने का आरोप लगाया। मध्य प्रदेश के भोपाल में मीडिया से बात करते हुए, चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जनता का समर्थन हासिल है और मतदाताओं ने विपक्ष को बार-बार खारिज किया है। चौहान ने कहा कि वे (राहुल गांधी) चुनाव नहीं जीत पा रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी लोगों के दिलों में बसते हैं... जनता ने उन्हें (विपक्ष को) पहले भी कई बार खारिज किया है। वे पहले भी हार रहे थे और अब भी हार रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि विपक्ष को यह समझ आ गया है कि वह चुनाव नहीं जीत सकता, इसलिए वह



अशांति फैलाने की कोशिश कर रहा है। शिवराज सिंह चौहान ने आगे कहा कि अगर लोगों के दिलों में उनके लिए कोई जगह होती, तो अब तक उन्हें सफलता मिल गई होती। अब, यह महसूस करते हुए कि वे चुनाव नहीं जीत सकते, वे अराजकता फैला रहे हैं जूठ और अफवाहें फैलाकर लोगों को भड़काने की कोशिश की जा रही है ज उनको ये कोशिशें यहाँ कामयाब नहीं होंगी। देश

ऐसे नकारात्मक लोगों को पूरी तरह से नकार देगा। ये टिप्पणियाँ रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के एक दिन पहले दिए गए उस बयान के बाद आईं, जिसमें उन्होंने कांग्रेस और उसके सहयोगियों पर भारत में बांग्लादेश जैसी राजनीतिक उथल-पुथल पैदा करने की कोशिश करने का आरोप लगाया था। सिंह ने दावा किया कि इन विरोध प्रदर्शनों का मकसद चुनावी सुधारों पर बात करना

नहीं, बल्कि अशांति फैलाना था। लखनऊ में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बोलते हुए, सिंह ने कहा कि देश के युवाओं को अराजक राजनीति का मोहरा बनाने की कोशिश की जा रही है। बांग्लादेश की तर्ज पर सच्चा परिवर्तन का प्रयास किया जा रहा है।

यह विवाद तब शुरू हुआ जब वरिष्ठ वकील प्रशांत भूषण ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञान कुमार के खिलाफ चल रहे विरोध प्रदर्शनों को सच्चा परिवर्तन की लड़ाई बताया, जबकि ऑल इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन की अध्यक्ष नेहा बोरा ने इस आंदोलन की तुलना बांग्लादेश में %जेन जेड के विरोध प्रदर्शनों से की। भाजपा ने इन टिप्पणियों को चुनावी प्रक्रिया के बाहर मोदी सरकार को गिराने की कोशिशों के सबूत के तौर पर पेश किया है, हालांकि विपक्ष ने इन आरोपों को खारिज कर दिया है।



नवीन ने कहा कि राजनीतिक टकराव के लिए राष्ट्रीय ध्वज का उपयोग करना उसकी पवित्रता का अपमान है। उन्होंने जोर देकर कहा कि दिल्ली को एक अशांत क्षेत्र (ज़्लैसपाइंट) में बदलने की कोशिशों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। पटना में पत्रकारों से बात करते हुए, उन्होंने विपक्ष पर आरोप लगाया कि वे आर्थिक विकास और जन कल्याण जैसी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को नजरअंदाज कर दिल्ली में अव्यवस्था फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। नवीन ने आरोप लगाया कि दिल्ली की सड़कों पर हंगामा करने वाले लोगों के मन में देश के संविधान और उसकी संस्थाओं

के लिए कोई सज्मान नहीं है, और वे देश के प्रति गहरी दुश्मनी की भावना से प्रेरित हैं। उन्होंने कहा कि हम देख रहे हैं कि कुछ लोग दिल्ली की सड़कों पर अव्यवस्था फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। देश की जनता अच्छी तरह जानती है कि ये लोग न तो देश के संविधान का सज्मान करते हैं और न ही संवैधानिक संस्थाओं का। उनके इस रवैये का एकमात्र कारण यह है कि उनके मन में देश के प्रति गहरी नफरत भरी हुई है। राहुल गांधी से सवाल करते हुए, भाजपा

नहीं देखेंगे। इसके बजाय, उनका पूरा ध्यान देश को अस्थिर करने की कोशिशों पर रहता है। विपक्ष द्वारा अचानक राष्ट्रीय ध्वज दिखाए जाने की आलोचना करते हुए, नबिन ने भाजपा के तिरंगे के साथ पुराने जुड़ाव का जिक्र किया और उन पार्टी कार्यकर्ताओं को याद किया जो पहले श्रीनगर के लाल चौक पर तिरंगा फहराने गए थे। उन्होंने आगे कहा, आजकल तिरंगा फहराने का एक चलन सा दिख रहा है। खैर, हम भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता हैं—वही लोग जो कश्मीर के लाल चौक पर तिरंगा फहराने गए थे। नबिन ने विरोध प्रदर्शनों के दौरान विपक्ष द्वारा तिरंगे के इस्तेमाल की तुलना सरकार की %हर घर तिरंगा% मुहिम से की और सवाल उठाया कि ज्या उन्होंने 13 से 15 अगस्त के बीच अपने घरों पर तिरंगा फहराया था। उन्होंने कहा कि ये लोग अब अचानक तिरंगा फहराने की बात करने लगे हैं।

टाइगर श्राफ फायरिंग जांच में सामने आये नये सबूतों ने उड़ाए सबके होश

मुंबई १९/१० (संवाददाता): बॉलीवुड अभिनेता टाइगर श्राफ की कार पर फायरिंग के मामले में मुंबई पुलिस को बड़ी कामयाबी मिली है। एंटी-गैंगस्टर टास्क फोर्स और राजस्थान पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए तीन आरोपियों को राजस्थान के कोटा रेलवे स्टेशन पर ट्रेन से गिरफ्तार किया है। तीनों आरोपी मुंबई से दिल्ली की ओर भाग रहे थे और बताया जा रहा है कि इनकी योजना नेपाल जाने की थी। पुलिस अब इस बात की पड़ताल कर रही है कि हमले की साजिश किसने रची, आरोपियों को अभिनेता की गतिविधियों की जानकारी कैसे मिली और वारदात के पीछे उनका मकसद क्या था।



रहकर रैपिडो राइडर के तौर पर काम करता था। पुलिस के मुताबिक, तीनों वारदात के बाद से फरार थे और उनकी तलाश में मुंबई क्राइम ब्रांच की कई टीमें लगातार छापेमारी कर रही थीं। हम आपको बता दें कि रविवार शाम करीब सात बजे टाइगर श्राफ जुहू स्थित एक फुटबॉल ज़्लब से निकल रहे थे, तभी अज्ञात हमलावरों ने उनकी कार को निशाना बनाकर गोलियां चलाईं। इस घटना में अभिनेता सीधे गोली लगने से बच गए, लेकिन उनके ड्राइवर को चोटें आईं। महाराष्ट्र के

उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने घटना के बाद टाइगर के आवास पर पहुंचकर उनसे मुलाकात की थी। शिंदे के मुताबिक, बारूद और कांच के टुकड़ों से अभिनेता के बाएं हाथ में चोट आई। उन्होंने बताया कि टाइगर और उनकी मां आयशा श्राफ घटना से सदमे में थे। राज्य सरकार की ओर से उन्हें सुरक्षा और सहयोग का भरोसा भी दिया गया। जांच से जुड़े सूत्रों के मुताबिक, हमलावरों को टाइगर के रविवार को नियमित रूप से फुटबॉल खेलने आने की जानकारी थी। आशंका है

कि उन्होंने वारदात से पहले इलाके की रेकी की और अभिनेता की दिनचर्या पर नजर रखी। फायरिंग के बाद आरोपियों के एसवी रोड से विले पार्ले और अंधेरी की ओर भागने की बात सामने आई है। बताया जाता है कि उन्होंने अंधेरी वेस्ट रेलवे स्टेशन के पास अपनी मोटरसाइकिल छोड़ दी और फिर ट्रेन से बोरीवली की ओर रवाना हुए। जांचकर्ताओं को आशंका थी कि वे गुजरात के रास्ते पुलिस से बचने की कोशिश कर सकते हैं। इसी सिलसिले में मुंबई क्राइम ब्रांच ने गुजरात में भी

तलाश तेज की थी। शहरखोजें दूसरी ओर, टाइगर श्राफ की कार पर फायरिंग के बाद मुंबई में फिल्मी हस्तियों की सुरक्षा को लेकर भी सतर्कता बढ़ा दी गई है। अभिनेता सलमान खान के बांद्रा स्थित गैलेक्सी अपार्टमेंट के बाहर पुलिस की तैनाती बढ़ा दी गई है। वहां बुलेटप्रूफ जैकेट पहने पुलिसकर्मी और पुलिस वाहन तैनात देखे गए।

हम आपको बता दें कि इस मामले में तीन अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है। पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता की धारा 109(1) और 3(5) तथा आर्म्स एक्ट की धारा 3 और 25 के तहत मामला दर्ज किया है। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने स्पष्ट कहा है कि सार्वजनिक हस्तियों को धमकाने या उन पर हमला करने वालों के खिलाफ सज़ा कार्रवाई की जाएगी। अब जांच का अगला फोकस हमले के पीछे की साजिश, आरोपियों के संभावित संपर्कों और वारदात में इस्तेमाल हथियारों के स्रोत का पता लगाने पर है।

नयी दिल्ली १९/१० (संवाददाता): कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने 17 अक्टूबर को 1990 के जनगणना नियमों में किए गए संशोधनों को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की आलोचना की। उन्होंने कहा कि 2027 की जनगणना के लिए गणना करने वालों (एन्यूमरेटर्स) के दायरे को बढ़ाने से आरएसएस और भाजपा के हजारों कार्यकर्ताओं को फायदा होगा। रमेश ने कहा कि यह साफ है कि यह आरएसएस/भाजपा के हजारों कार्यकर्ताओं के लिए एक रोजगार गारंटी योजना है। एक पोस्ट में, उन्होंने आरोप लगाया कि ये बदलाव बेलगाम में 10 जुलाई से 12 जुलाई तक हुई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की एक हालिया बैठक के बाद किए गए हैं। रमेश ने दावा किया कि %जनसंख्या के परिवर्तनों पर उच्च-स्तरीय समिति% - जिसने भारतीय और विदेशी संगठनों से जनसंख्या के बदलावों पर सुझाव मांगे थे - उसमें मुख्य रूप से ऋस से जुड़े सदस्य शामिल हैं। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने अब

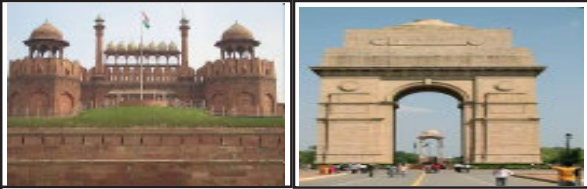


जनगणना 2027 के लिए योग्य गणनाकारों की सूची का विस्तार कर दिया है। इसके पीछे काफी गड़बड़ है।

10-12 जुलाई 2026 के दौरान, ऋस ने बेलगाम में अपने कार्यकर्ताओं के लिए एक बड़ा प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया था, जिसका एकमात्र एजेंडा %जनगणना 2027% था। केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा 26 मई 2026 को गठित %जनसंख्या के परिवर्तनों पर उच्च-स्तरीय समिति% ने अभी हाल ही में देश में जनसंख्या के बदलावों को लेकर जनता (जिसमें भारतीय और विदेशी संगठन भी शामिल हैं) से सुझाव मांगे हैं। इस समिति में %उच्च-स्तरीय% बस एक ही बात है - इसके सदस्यों का ऋस इकोसिस्टम से जुड़ा होना। इसलिए, हमें पता है कि ये सुझाव कहां से आने

वाले हैं। रमेश ने आगे आरोप लगाया कि इस संशोधन से 2027 की जनगणना की विश्वसनीयता खत्म हो जाएगी। उन्होंने कहा कि इसमें भी %सामाजिक-आर्थिक और जाति जनगणना% (स्ट्रुक्चर) की तरह ही हेरफेर की जाएगी। उन्होंने कहा कि इससे पहले से ही खराब हो चुकी जनगणना और भी ज्यादा दूषित हो जाएगी। एक और संस्था को बर्बाद किया जा रहा है। स्ट्रुक्चर की तरह, जनगणना में भी खतरनाक तरीके से छेड़छाड़ की जाएगी। प्रधानमंत्री और गृह मंत्री की जोड़ी की कुटिल योजनाओं की कोई सीमा नहीं है।

यह टिप्पणी केंद्र सरकार द्वारा 16 अक्टूबर को 1990 के जनगणना नियमों में किए गए उस संशोधन के बाद आई है, जिसके तहत जनगणना करने वालों (एन्यूमरेटर) के दायरे में बढ़ा दिया गया है। अब इसमें सरकारी और निजी शिक्षण संस्थानों के शिक्षक, सरकारी अधिकारी, जलक और अन्य लोगों को भी शामिल किया गया है।



विविध समाचार



दशहरा के दिन कहाँ, कितने और कौन से दीये जलाने चाहिए?

हिन्दू पंचांग के अनुसार, इस साल दशहरा 20 अक्टूबर का पड़ रहा है। दशहरा के दिन जहाँ एक ओर रावण दहन कर भगवान श्री राम की पूजा की जाती है तो वहीं, इस दिन दीये जलाना भी बहुत शुभ माना जाता है। ऐसे में जानते हैं कि दशहरा के दिन कहाँ, कितने, कब और कौन से प्रकार के दीये जलाना श्रेष्ठ है और क्या हैं उसका महत्व।

दशहरा पर कहाँ-कहाँ दीये जलाएं?
दशहरा के दिन दसों दिशाएँ पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, पूर्व-उत्तर (ईशान कोण), दक्षिण-पूर्व (आग्नेय कोण), पश्चिम-उत्तर (वायव्य कोण), दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य कोण), ऊर्ध्व (ऊपर की ओर) आदि खुली होती हैं। ऐसे में इस दिन इन दसों दिशाओं में दीये जलाने चाहिए।

कितने दीये जलाएं?
दशहरा पर 10 दीये 10 दिशाओं के होते हैं और 5 दीये पेड़-पौधों यानी कि तुलसी, पीपल, शमी, बरगद और कैले आदि के होते हैं। इसके अलावा, एक दीया भगवान श्री राम के आगे जलाना चाहिए। एक दीया घर की रसोई और घर की तिजोरी में भी जलाना शुभ सिद्ध होता है।

कौन से दीये जलाएं?
दसों दिशाओं में जलाने वाले दीये सरसों के तेल के होने चाहिए। पेड़-पौधों के नीचे जलाने वाले दीये तिल के तेल के होने चाहिए। वहीं, श्री राम के आगे घी का दीपक जलाएं। घर की रसोई और तिजोरी में अलसी के तेल का दीया जलाना चाहिए क्योंकि अलसी धन आकर्षित करती है।

किस समय दीये जलाएं?
दशहरा के दिन श्री राम के लिए दीया सुबह और शाम पूजा के समय जलाना चाहिए। वहीं, दिशाओं, पेड़-पौधों, रसोई और तिजोरी में जलाने वाले दीयों को संध्या के समय सूर्यास्त के बाद जलाना चाहिए। इससे दीया जलाने का योग्यता शुभ प्रभाव घर पर नजर आने लगता है।

विजय दशमी पर करें ये महा उपाय, हर काम में मिलेगी जीत

दशहरा इस साल 20 अक्टूबर को मनाया जाएगा। दशहरा के दिन जहाँ एक ओर रावण किया जाता है तो वहीं दूसरी ओर श्री राम की पूजा का विधान है। इसके अलावा, ज्योतिष शास्त्र में भी दशहरा को बहुत शुभ और लाभकारी माना जाता है क्योंकि इस दिन दसों दिशाएँ खुली होती हैं और शुभता प्रदान करती हैं। दशहरा को विजय दशमी भी कहते हैं। इसी कारण से ज्योतिष में ऐसा बताया गया है कि इस दिन कुछ सरल छोटे-छोटे उपाय करने से हर काम में जीत हासिल की जा सकती है।

- दशहरा के उपाय**
- दशहरा के दिन घर की उत्तर-पूर्व दिशा में शमी का पौधा लगाएं। इससे घर की नकारात्मक ऊर्जा खत्म होगी और सकारात्मकता बढ़ेगी।
 - दशहरा के दिन सरसों के तेल में तिल मिलाकर जलाएं। इससे शनिदेव का क्रोध शांत होगा और साढ़े साती एवं ढ़ेखा से राहत मिलेगी।
 - दशहरा के दिन घर में सुंदरकांड और रामचरितमानस का पाठ करें। इससे भगवान श्री राम का आशीर्वाद मिलेगा और शुभता आएगी।
 - दशहरा के दिन घर में राम दरबार की स्थापना करना भी शुभ माना जाता है। इससे विगड़े काम भी बनने लगते हैं और ग्रह दोष मिटता है।
 - दशहरा के दिन 7 लौंग, 7 कापुर और 5 तेजपते लेकर उन्हें जला लें और फिर उसका धुआँ घर में करें। इससे बुरी नजर उतर जाती है।
 - दशहरा के दिन शनिदेव और हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए। इससे जीवन के संकट दूर होते हैं और शनि दोष से मुक्ति मिलती है।



बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक दशहरा 20 अक्टूबर को

विजयादशमी (दशहरा) हमारा राष्ट्रीय पर्व है, जिसे सभी भारतीय बड़े हर्षोल्लास एवं गर्व के साथ मनाते हैं। आश्विन मास में नवरात्रि का समापन होने के दूसरे दिन यानी दशमी तिथि को मनाया जाने वाला दशहरा का यह पर्व बहुत ही शुभ माना जाता है। इस दिन खास कर खरीददारी करना शुभ मानते हैं, जिसमें सोना, चांदी और वाहन की खरीदी बहुत ही महत्वपूर्ण है। दशहरा पर पूरे दिन भर ही मुहूर्त होते हैं इसलिए सारे बड़े काम आसानी से संपन्न किए जा सकते हैं। यह एक ऐसा मुहूर्त वाला दिन है जिस दिन बिना मुहूर्त देखे आप किसी भी नए काम की शुरुआत कर सकते हैं। आश्विन शुक्ल दशमी को मनाए जाने वाला यह त्योहार विजयादशमी या दशहरा के नाम से प्रचलित है। यह त्योहार वर्षा ऋतु की समाप्ति का सूचक है। इन दिनों चौमासे में स्थगित कार्य फिर से शुरू किए जा सकते हैं। दशहरा के दिन भगवान श्रीराम की पूजा का दिन है। इस दिन घर के दरवाजों को फूलों की मालाओं से सजा दिया है। घर में रखें शस्त्र, वाहन आदि भी पूजा की जाती है। दशहरा का यह त्योहार बहुत ही पावनता के साथ संपन्न किया जाता है। उसके बाद रावण दहन मनाया जाता है। नवरात्रि के नौ दिनों तक मां दुर्गा की आराधना करने के बाद भगवान श्रीराम ने दशहरा के दिन ही लंकापति रावण का वध किया था। वैसे तो रावण बहुत परम ज्ञानी पंडित था, लेकिन अहंकार के चलते उन्होंने माता सीता का हरण किया और लंका ले गए और अशोक वटिका में कैद करके रखने दुस्साहस किया था। जिसके परिणाम स्वरूप भगवान राम ने हनुमान जी की



सहायता से राक्षसराज रावण पर काबू पाने में सफल हो गए थे। उन्होंने रावण को युद्ध में परास्त करके उन्हें मुक्ति देने का महान कार्य करके दशमी के दिन को पावन कर दिया। श्रीराम ने रावण के अहंकार को बुर-वूर करके दुनिया के लिए भी एक बहुत मूल्यवान शिक्षा प्रदान की, जिसकी हम सभी को रोजमर्रा के जीवन में बहुत जरूरी है। श्रीराम की यही सीख मानवीय जीवन में बहुउपयोगी सिद्ध होगी। हमें भी अपने जीवन में अहंकार, लोभ, लालच और

- अत्याचारी वृत्तियों को त्याग कर क्षमरूपी बनकर जीवन जीना चाहिए। भगवान श्रीराम की यह सीख बहुत ही सच्ची और हमें मोक्ष प्राप्ति की ओर ले जाने वाली है।
- भगवान राम-सीता और हनुमान की पूजा-अर्चना की जाती है।
 - विजयादशमी पर शमी वृक्ष का पूजन किया जाता है।
 - रावण रचित शिव तांडव स्तोत्र से भगवान शिव की आराधना की जाती है।
 - इस दिन करोड़ों रूपए की फूलों की बिक्री होती है और लोग अपने घर के दरवाजों फूलों की मालाओं से सजाकर उत्सव मनाते हैं।
 - इस दिन लोग अपनी-अपनी क्षमतानुसार सोना-चांदी, वाहन, कपड़े तथा बर्तनों की खरीददारी करते हैं।
 - इस दिन देश भर में रावण के पुतले बनाकर जगह-जगह जलाए जाते हैं।
 - दशहरा के दिन शहर-कस्बों और गांवों में श्रीराम-सीता स्वयंवर प्रसंग, रामभक्त हनुमान का लंका दहन कार्यक्रम, रामलीला का बखान करत हुए राम-रावण युद्ध के साथ रावण दहन किया जाता है।
 - इस दिन खास तौर पर मिलकी के फकीड़े और गुलगुले बनाने का प्रचलन है।
 - रावण दहन के बाद एक-दूसरे के घर जाकर, गले मिलकर, चरण छू कर बड़ों का आशीर्वाद लिया जाता है और साथ ही शमी पत्तों को एक-दूसरे को बांटा जाता है। ऐसा यह पावन त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत को दर्शाता है।

दशहरा के दिन न करें इन चीजों का दान

दशहरा, जिसे विजयादशमी भी कहा जाता है, हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण त्योहार है। यह बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। दशहरा हर साल आश्विन महीने के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है।

हिंदू पंचांग के अनुसार आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि के दिन विजयदशमी यानी कि दशहरा मनाई जाती है। दशहरा का मुख्य कारण भगवान राम द्वारा रावण का वध करना है। सम्वर्तमानस के अनुसार, भगवान राम ने रावण को मास्कर राक्षसों का अंत किया था। दशहरा के दिन शस्त्रों की पूजा करने का भी रिवाज है। यह माना जाता है कि शस्त्रों की पूजा करने से बुरी शक्तियों का नाश होता है। दशहरा नवरात्रि के दसवें और अंतिम दिन मनाया जाता है। नवरात्रि में देवी दुर्गा के नौ रूपों

की पूजा की जाती है। दशहरा के दिन रावण का पुतला जलाया जाता है। यह रावण के अहंकार और बुराई पर जीत का प्रतीक है। इतना ही नहीं, दशहरा के दिन सैनिक और पुलिसकर्मी अपने शस्त्रों की पूजा करते हैं।

चमड़े के चीजों का दान
हिंदू धर्म में पशुओं को पवित्र माना जाता है। चमड़ा पशुओं की खाल से बनता है, इसलिए इसे दान करना पशुओं के प्रति सम्मान नहीं दिखाना माना जाता है। दशहरा को शुद्धता और पवित्रता का पर्व माना जाता है। चमड़ा अशुद्ध माना जाता है, इसलिए इसे दान करना शुद्धता के विरुद्ध माना जाता है। मान्यताओं के अनुसार, चमड़े की चीजों का दान करने से अशुभ फल मिलते हैं।

धारदार चीजों का दान
ऐसी मान्यता है कि धारदार चीजें दान करने से घर में कलह, तनाव और असहमति पैदा होती है। यह माना

जाता है कि ये चीजें नकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करती हैं और परिवार के सदस्यों के बीच संबंधों को खराब कर सकती हैं। धारदार चीजें दान करने से घर में घन की हानि होती है। माना जाता है कि ये चीजें लक्ष्मी माता को नाराज करती हैं और घर से धन भाग जाता है। धारदार चीजें अशुभ शक्तुन मानी जाती हैं। इन्हें दान करना या लेना अशुभ माना जाता है और इससे घर में नकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश होता है।

हल्दी का दान
हल्दी को गुरु ग्रह से जोड़ा जाता है। माना जाता है कि शाम के समय हल्दी दान करने से गुरु ग्रह कमजोर होता है, जिसका असर व्यक्ति के जीवन पर पड़ सकता है। शाम के समय हल्दी दान करने से नकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश होता है और घर में क्लेश हो सकता है। हल्दी को शुभ माना जाता है, लेकिन शाम के समय इसे दान करना अशुभ शक्तुन माना जाता है।



राष्ट्रीय नवरात्रि के नौ दिनों बाद आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को दशहरा पर विजयादशमी का त्योहार मनाया जाता है। इस बार विजयादशमी 20 अक्टूबर को मनाया जाएगा, इस दिन भगवान श्रीराम ने रावण का वध किया था, इसी के बाद से दशहरा के दिन रावण के पुतले का दहन असत्य पर सत्य की जीत के रूप में मनाया जाता है। साथ ही जवाड़े विसर्जन, शमी और शस्त्र पूजा की जाती है।

दशहरा पर कब करें पूजा और किस समय रावण दहन

विजयादशमी यानी दशहरा पर रावण दहन को लेकर सभी में भारी उत्साह रहता है। हालांकि, धार्मिक मान्यताओं के अनुसार रावण दहन भी एक तय शुभ मुहूर्त में ही किया जाना चाहिए।

सनातन धर्म में असत्य पर सत्य और अधर्म पर धर्म की विजय के प्रतीक के रूप में विजयादशमी यानी दशहरा का पावन पर्व बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन देश भर में भगवान राम की जीत की खुशी में रावण, कुंभकरण और मेघनाद के पुतलों का दहन किया जाता है। बहुत से लोगों के मन में सवाल रहता है कि आखिर रावण दहन का शुभ मुहूर्त क्या है। पंचांग के अनुसार, वर्ष 2026 में दशहरा का यह महान पर्व 20 अक्टूबर 2026, मंगलवार को मनाया जाएगा। बुकि इस दिन नवमी तिथि दोपहर 12:50 बजे

समाप्त हो रही है, इसलिए इसके तुरंत बाद दशमी तिथि का आरंभ हो जाएगा। इसी वजह से इस बार दशहरा और रावण दहन दोनों एक ही दिन संपन्न किए जाएंगे।

रावण दहन का सही समय और शाम का मुहूर्त
दशहरा के दिन रावण दहन हमेशा प्रदोष काल और सूर्यास्त के समय करना सबसे उत्तम माना जाता है। पंचांग के अनुसार, 20 अक्टूबर को सूर्यास्त शाम 05:47 पर होगा। इसलिए रावण दहन का सबसे उत्तम समय शाम 05:47 से रात 08:23 के बीच रहेगा।

शस्त्र पूजा और अपराजिता पूजन का विशेष विधान
विजयादशमी के दिन मां दुर्गा और भगवान श्रीराम की पूजा के साथ-साथ शस्त्रों की पूजा करने का भी विधान है। इसके अलावा ईशान कोण में जाकर अपराजिता षोडश की पूजा करना और शमी के पेड़ के दर्शन करना जीवन में

विजय और सफलता का प्रतीक माना जाता है।

दशहरा के दिन नीलकंठ पक्षी के दर्शन का महत्व
धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, दशहरा के दिन नीलकंठ पक्षी के दर्शन करना बेहद शुभ और भाग्यशाली माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन नीलकंठ के दर्शन से व्यक्ति के सभी कष्ट दूर होते हैं और उसके रुके हुए कार्य तेजी से पूरे होने लगते हैं।

बुराई का त्याग और जीवन में नई शुरुआत का संकल्प
बाहरी रूप से रावण के पुतले को जलाने के साथ ही यह पर्व हमें अपने भीतर के अहंकार, क्रोध, लोभ और बुराइयों का त्याग करने की प्रेरणा देता है। दशहरा का असली संदेश यही है कि हम सच्चाई और सदाचार के मार्ग पर चलकर अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव लाएं।



दशहरा पर क्यों बांटी जाती है 'सोना पत्ती' शमी पत्र का पौराणिक और वैज्ञानिक रहस्य

20 अक्टूबर 2026 को दशहरा का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन रावण दहन के बाद शमी के पत्ते बांटकर लोग एक-दूसरे को विजयादशमी की बधाई देते हैं। आखिर क्या है इस शनि के वृक्ष के पत्तों का महत्व क्यों बांटते हैं इन पत्तों को और इन्हें सोना पत्ती क्यों कहते हैं।

धार्मिक एवं पौराणिक मान्यताएँ
शनि और शिव का वास: शमी के वृक्ष में शनि देव का वास माना जाता है। दशहरा पर इसकी पूजा और दीपक जलाने से शनि दोष, साढ़ेसाती और ढ़ेखा का प्रभाव कम होता है। यह भगवान शिव और श्री गणेश से भी जुड़ा है। महाभारत काल की कथा: पांडवों ने अपने अज्ञातवास के दौरान अपने अस्त्र-शस्त्र इसी वृक्ष में छिपाए थे और बाद में कौरवों पर विजय प्राप्त की थी। यही कारण है कि क्षत्रिय वर्ग में विजयादशमी के दिन शस्त्र और शमी पूजन का विशेष महत्व है। अग्नि का स्वरूप: संस्कृत साहित्य में शमी को 'शमी गर्भ' भी कहा गया है, जिसे अग्नि उत्पन्न करने वाला पवित्र वृक्ष माना जाता है।

'सोना पत्ती' और सामाजिक महत्व
समृद्धि और भाईचारे का प्रतीक: रावण दहन के बाद शमी की पत्तियों को 'सोना पत्ती' मानकर एक-दूसरे को बांटा जाता है। यह परंपरा सामाजिक सौहार्द, अच्छे संबंधों और आर्थिक समृद्धि का संदेश देती है। श्रीराम ने बांटा साथ सोना: कहते हैं कि प्रभु श्रीराम ने अयोध्यावासियों को जीत की खुशी में स्वर्ण की भेंट दी थी। इसी परंपरा के तहत शमी के पत्ते को सोना पत्ती मानकर सभी को बांटा जाता है। शुभता का संदेश: ग्रामीण क्षेत्रों में इसे किसान और व्यापारी वर्ग समृद्धि और उज्ज्वल भविष्य का शुभ प्रतीक मानते हैं।

आयुर्वेदीय एवं पर्यावरणीय गुण
वातावरण की शुद्धि: आयुर्वेद में शमी का विशेष स्थान है। इसकी पत्तियाँ हवा को शुद्ध करती हैं। मानसून के अंत में बीमारियों से बचाव और पर्यावरण संतुलन के लिए इसे बेहद लाभकारी माना गया है।

किसानों के लिए प्रत्यक्ष फायदे
फसल की सुरक्षा: खेत की मेड़ पर शमी लगाने से तेज हवाओं और तुफानों से फसलों का बचाव होता है। पशुओं का चारा और ईंधन: भीषण गर्मी में भी हरा-भरा रहने के कारण यह पशुओं के लिए चारे का काम करता है। इसकी जड़ें काफी गहरी होती हैं, जिससे मिट्टी का पोषण बना रहता है। इन्हीं बहुगुणी, औषधीय और धार्मिक कारणों से बरगद और पीपल की तरह शमी (खेजड़ी) को भी हिंदू धर्म में पूजनीय स्थान दिया गया है।



कलिंग समाचार



संपादकीय

मोदी की विदेश नीति पर सवालिया निशान

नरेन्द्र मोदी सरकार जिस विदेश नीति पर चल रही है, उसके संभावित नुकसान के बारे में राहुल गांधी काफी पहले से आगाह करते रहे हैं। लेकिन कभी भी नेता प्रतिपक्ष श्री गांधी की सही सलाह को मोदी सरकार ने नहीं सुना, बल्कि भाजपा नेता उन्हें राजनीति का नौसिखिया साबित करने में लगे रहे या फिर उनके बयानों से देशविरोधी ताकतों को बल मिलता है, ये आरोप लगाते रहे। अभी डोनाल्ड ट्रंप के युद्धविराम के दावों को लेकर भी राहुल गांधी ने जो सवाल किए उसके बाद भाजपा नेताओं ने यहां तक कह दिया कि राहुल गांधी पाकिस्तान की भाषा बोल रहे हैं और उन्हें निशान-ए-पाकिस्तान से नवाजा जाएगा। घरेलू राजनीति में आरोप-प्रत्यारोप चलते रहते हैं, लेकिन विदेश नीति में सारे दल अब तक एकजुटता दिखाते रहे हैं, मगर अब मोदी सरकार में यह परंपरा भी टूट चुकी है। अब विदेश नीति मोदीनीति के तौर पर प्रस्तुत की जा रही है। ऑपरेशन सिंदूर को लेकर 33 देशों में भेजा गया सर्वदलीय प्रतिनिधमंडल इसकी मिसाल है। भारत के पहले भी पाकिस्तान और चीन के साथ युद्ध हुए, कभी भी भारत ने पहले हमला नहीं किया, बल्कि परिस्थितियां संभालने के लिए उसे हथियार उठाने पड़े। यह बात पूरी दुनिया में अकाट्य सत्य की तरह बनी हुई है, इसलिए इससे पहले भारत को कभी भी अपना पक्ष रखने के लिए सांसदों, राजनयिकों की टोली देश-देश नहीं भेजनी पड़ी। इस बार भी भारत ऐसा कुछ न करता तब भी दुनिया ऑपरेशन सिंदूर पर सवाल नहीं करती। क्योंकि जैसा हमेशा हुआ, अब भी वैसा ही हुआ कि सीमापार से आतंकी हमारी धरती पर आए, हमला किया, निर्दोष नागरिकों को मारा और तब जाकर भारतीय सेना ने पाकिस्तान के आतंकी अड्डों पर हमला किया। पाकिस्तान ने पलटवार करने के लिए जो कदम उठाए, भारत ने उनका भी तगड़ा जवाब दिया। अफसोस है कि पुंछ जैसे सीमाई इलाकों में निर्दोष नागरिकों की मौत हुई, लेकिन यहां सेना की नहीं सरकार की गलती थी, कि उसने पहले से नागरिक सुरक्षा के इंतजाम नहीं किए। बाकी जिन शहरों या सैन्य अड्डों को पाकिस्तान ने निशाना बनाने की कोशिश की, वो सारी हमारी रक्षा प्रणाली ने नाकाम कर दी थी। लेकिन इस बीच डोनाल्ड ट्रंप ने बीच में आकर सब गड़बड़ कर दिया। ट्रंप की मध्यस्थता से भारत युद्ध विराम के लिए सहमत हुआ यह संदेश तो पूरी दुनिया में गया ही, क्योंकि भारत ने अब तक इसका खंडन नहीं किया है। दूसरी तरफ पाकिस्तान को भी बढ़कर बोलने और खुद को पीड़ित की तरह पेश करने का मौका मिला। मोदी सरकार की विदेश नीति की यह सबसे बड़ी असफलता थी कि जिन देशों ने पहलगाम हमले के तुरंत बाद भारत के लिए सहानुभूति दिखाई, उनमें से कोई ऑपरेशन सिंदूर और उसके बाद भारत के साथ खड़ा नहीं रहा, अफगानिस्तान को छोड़कर। अब प्रधानमंत्री मोदी देश में तो खुद घूम-घूमकर ऑपरेशन सिंदूर का श्रेय लेने और उस पर राजनीति करने में लगे हैं, उधर उनका पक्ष रखने के लिए विदेशों में गया प्रतिनिधिमंडल भी भारत के पक्ष में माहौल बनाने में किस हद तक सफल होगा, यह विचारणीय है। क्योंकि इन प्रतिनिधिमंडलों की बैठकें अमूमन सामाजिक संगठनों, विचार मंचों, और वहां के प्रवासी भारतीय समुदाय से हो रही हैं, बहुत कम देशों में सरकार के साथ उच्च स्तरीय बैठक इन दलों की हुई है। जबकि विदेश नीति के मसले, किस देश को किस मुद्दे पर कितना साथ देना है, ऐसे फैसले सरकार में ऊंचे पदों पर बैठे लोग ही तय करते हैं, जो नीति निर्धारक होते हैं असल शक्ति उनके हाथों में होती है, और इन लोगों के साथ सर्वदलीय प्रतिनिधि मंडल की बैठकें हुई हैं, ऐसा देखने नहीं मिला। मेहमाननवाजी के तकाजे के हिसाब से अपने देश आए भारतीय प्रतिनिधिमंडल को हर देश स मान दे रहा है, उनकी बात सुन रहा है, आतंकवाद की निंदा भी कर रहा है, लेकिन क्या मोदी सरकार का मकसद केवल यही था। अगर ऐसा ही समर्थन जुटाना था तो फिर इन तमाम देशों में भारतीय दूतावास इस जि मेदारी को पूरा कर सकते थे। अच्छी, मनलुभावन बातें करने के लिए क्या जनता के धन पर इन प्रतिनिधिमंडलों को भेजा गया है।

सीमित युद्ध से भारत को सीखने होंगे कई सबक

जगदीश रत्तनानी
आज समझदारी इसी में है कि युद्ध के कोहरे के बीच क्या सही या गलत हुआ, इस बाबत सभी बाहरी दावों और प्रतिदावों को त्याग दिया जाए। समाचार मीडिया एंकरों और स्व-घोषित अति-राष्ट्रवादियों ने कई (ज्यादातर झूठे) दावे कर गड़बड़ कर दी है। सरकार समर्थक मीडिया ने अपने आकाओं की सेवा में काल्पनिक दावों की ऐसी झड़ी लगा दी जिससे सरकार शर्मिंदा हो सकती है और मीडिया ने खुद को बेकार साबित कर दिया है।

पहलगाम में आतंकवादी हत्याओं की निंदा करने और रक्षा बलों को सलाम करने में सारा देश प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ खड़ा है। इस घटना के कारण पाकिस्तान पर भारत ने पांच दशकों में इतना सघन हमला किया। भारत की इस कार्यवाई के लिए व्यापक समर्थन आतंकवादियों को खोजने और उन्हें न्याय के कटघरे में लाने के राष्ट्रीय संकल्प को दर्शाता है। फिर भी, यह संकल्प आत्म-प्रशंसा के शोर के एक प्रतिध्वनि कक्ष में उतरने का जोखिम उठाता है जो राष्ट्र को उस गहन विश्लेषण से रोक सकता है। इस संघर्ष में हालांकि कुछ भारतीय उद्देश्यों को हासिल कर लिया गया लेकिन इस स्तर पर यह तर्क देना मुश्किल है कि ऑपरेशन सिंदूर एक बड़ी सफलता थी। भले ही ऑपरेशन में सीमित सफलता मिली है लेकिन इससे मिले सबक असीमित हैं। हमारे पास डेटा की एक खदान है जिसमें राजनीतिक ग्राउंड वर्क, राजनयिक जुड़ाव और योजना, रणनीति या परिचालन मुद्दों के विचारों से लेकर उच्च तकनीक

साथ ही अगर हमें इस मुद्दे पर राष्ट्रीय एकता का पूरा लाभ उठाना है तो विपक्ष पर चुनावी शैली के हमलों के बजाय राजनीतिक दलों को अधिक

विश्वास-निर्माण करने वाले कदमों के साथ एक साथ लाना होगा।पहलगाम आतंकी हत्याओं के ठीक दो दिन बाद 24 अप्रैल को बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में जब लोकसभा और राज्यसभा में विपक्ष के नेताओं सहित सभी राजनीतिक नेता मौजूद थे, उसमें प्रधानमंत्री के शामिल न होने के फैसले से विश्वास बहाली में कोई मदद नहीं मिली। वह गलत निर्णय पुरानी ढ़र्र की नीतियों के आधार पर लिया

राहुल के पुंछ दौरे के बाद मोदी से उनकी सीधी तुलना!

शकील अख्तर

यह जो कोर इशु है राष्ट्रवाद वह जब छद्म राष्ट्रवाद में भी परिवर्तित हो जाता है तब भी जनता की आंख नहीं खुलना चिन्ता की बात है। और पहलगाम ही घटना नहीं है। उसके बाद अचानक सीजफायर सबसे बड़ा झटका थी। वाकई इतना बड़ा कि 11 साल में बने अंध भक्त भी हिल गए।बीजेपी और आरएसएस में भी बैचेनी फैल गई। अमेरिका की मध्यस्थता नहीं। सीधा आदेश।

क्या यह बात सही साबित हो रही है कि यथा प्रजा तथा राजा! सिद्धान्त यह बात नहीं मानी जाना चाहिए। एक तो राजशाही की कहावत है। कर्मों के फल के सिद्धांत से बनी है। दूसरे शासक से ज्यादा जनता को आरोपित करती है। लोकतंत्र में जनता ही सर्वोच्च होती है। लेकिन आज जो दिख रहा है वह ऐसा लगता है कि जैसे हम लोग ही, जनता ही राहुल के योग्य नहीं हैं!

हम इसी को डिजर्व करते हैं जो पहलगाम के बाद हो रहा है। 11 साल में बड़ी-बड़ी घटनाएं हुईं। मगर कोई बड़ी नाराजगी, गुस्से, आक्रोश की लहर नहीं दिखी। बड़ी घटनाओं से आशय उनसे नहीं जिसे मोदी महत्व ही नहीं देते। जैसे नोटबंदी, कोरोना में सरकार का हाथ खड़े करना या बेरोजगारी, महंगाई, सरकारी चिकित्सा, शिक्षा खतम करना और दूसरे तमाम आर्थिक रोजमर्रा की जिन्दगी से जुड़े सवाल।

वाले सैन्य हार्डवेयर व अत्याधुनिक प्लेटफार्मों के प्रदर्शन पर समृद्ध युद्ध क्षेत्र डेटा तक शामिल हैं।
अगली लड़ाई उन लोगों द्वारा जीती जाएगी जो सैन्य मोर्चे पर इन सीखों पर अच्छी तरह से अमल कर सकते हैं लेकिन सबसे बड़ा सबक विशेष रूप से राजनीतिक मोर्चे पर होगा जहां युद्ध पर बड़े निर्णय लिए जाते हैं। सीखना हमेशा आसान नहीं होता है। उच्चतम राजनीतिक स्तर पर, यह उस रणनीति को चुनौती देता है जिसने हमें मर्दानगी की बातें और युद्ध के नारे दिए, जिसमें चुनावी रैली भी शामिल है, लेकिन युद्ध के समय अंतरराष्ट्रीय समर्थन जुटाने के लिए आवश्यक कड़ी मेहनत के कम सबूत मिले. साथ ही, विनम्रता, ईमानदारी और जिज्ञासा की भावना के साथ कठिन सवालों को प्रोत्साहित करने की इच्छा भी होनी चाहिए, जिनमें से कोई भी आत्म-प्रशंसा से मदद नहीं करता है जो गहन जांच को बंद कर देता है।

युद्ध अंतिम उपाय है। यह भारत कह चुका है और इसे वास्तव में प्रधानमंत्री ने अतीत में व्यक्त किया है। 2022 में कारगिल में प्रधानमंत्री को यह कहते हुए उद्धृत किया गया था- भारत ने हमेशा युद्ध को अंतिम उपाय के रूप में देखा है, लेकिन राष्ट्र पर बुरी नजर डालने वाले किसी भी व्यक्ति को करारा जवाब देने की ताकत और रणनीति सशस्त्र बलों के पास है। तो भी जब इस अंतिम उपाय का प्रयोग किया जाता है तो ब्रह्मास्त्र अपनी शक्ति खो सकता है। इसका उसी तरह से फिर से उपयोग या संचालन नहीं किया जा सकता।

से छूटती हैं। हम उन पाठों पर वापस आ गए जो सीखे नहीं गए हैं। कांग्रेस पहले ही कह चुकी है कि भाजपा गेम खेल रही है। यह एक ऐसे मुद्दे पर कमजोर भरोसे और खराब राजनीतिक संबंधों में उतरता है जो गहरी राजनीतिक एकता की मांग करता है। जानकारियां जिस तरह से अर्थहीन हो गई हैं उससे कुछ सबक मिलते हैं। आज समझदारी इसी में है कि युद्ध के कोहरे के बीच क्या सही या गलत हुआ, इस बाबत सभी बाहरी दावों और प्रतिदावों को त्याग दिया जाए। समाचार मीडिया एंकरों और स्व-घोषित

महाकाव्य होता!

दूसरी तरफ नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी हैं। हर जगह अपनी जि मेदारी निभाते हुए। और सबसे बड़ी बात उपहास, अपमान के बाद भी। कृष्ण के इस उपदेश को तो लगता है उन्होंने ने ही सबसे ज्यादा आत्मसात किया है-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचना। फल को इच्छा से दूर। और दूसरी तरफ देखिए यहां अभी तक पता नहीं चला है कि पहलगाम के आतंकवादी कौन थे लेकिन आपरेशन सिंदूर के नाम पर वोट मांगना शुरू कर दिए। 2019 के लोकसभा चुनाव से पहले पुलवामा में हमारे 46 जवान कैसे मारे गए थे यह भी आज तक पता नहीं चला मगर उसके नाम पर भी वोट मांग लिए गए थे।

लेटेस्ट (नवीनतम) अभी राहुल गांधी पुंछ गए। पाकिस्तान ने यहां नागिरक क्षेत्रों पर भारी गोलाबारी की थी। 16 लोग मारे गए थे। 100 के करीब घायल हुए थे। मकान खंडहरों में बदल गए। गुरुद्वारे तक को नहीं छोड़ा। राहुल हर जगह गए। गुरुद्वारे जहां एक बुजुर्ग सरदार जी राहुल से कह रहे हैं कि मोदी यहां नहीं आए। पुंछ का नाम तक नहीं लिया। आपसे हमें बड़ी उ मीदें हैं। देश को भी हैं। 11 साल की जाने कितनी घटनाएं हैं जहां राहुल लोगों के दुःख दर्द में शामिल होने पहुंचे। नहीं लिख रहे। जनता को खुद याद करना चाहिए। और जनता को अगर याद नहीं रहता है तो फिर वही बात कि वह अच्छे

है। यह भारत कह चुका है और इसे वास्तव में प्रधानमंत्री ने अतीत में व्यक्त किया है। 2022 में कारगिल में प्रधानमंत्री को यह कहते हुए उद्धृत किया गया था- भारत ने हमेशा युद्ध को अंतिम उपाय के रूप में देखा है, लेकिन राष्ट्र पर बुरी नजर डालने वाले किसी भी व्यक्ति को करारा जवाब देने की ताकत और रणनीति सशस्त्र बलों के पास है।

तो भी जब इस अंतिम उपाय का प्रयोग किया जाता है तो ब्रह्मास्त्र अपनी शक्ति खो सकता है। इसका उसी तरह से फिर से उपयोग या संचालन नहीं किया जा सकता। कम कार्रवाई को हल्के में लिया जाएगा, मजबूत कार्रवाई से अस्वीकार्य स्तर के जोखिम के साथ तेजी से वृद्धि का जोखिम होगा। डोनाल्ड ट्र प द्वारा पहले जल्दबाजी में घोषित किए गए संघर्ष विराम के मद्देनजर यह भारत के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत या पाकिस्तान ने संघर्ष विराम की घोषणा नहीं की थी। भविष्य में इसका क्या मतलब है इसका पूरी तरह से विश्लेषण करने में समय लगेगा। इस बीच, व्हाट्सएप समूहों पर भेजी जा रही कुछ राजनीतिक प्रतिक्रियाओं से बचना चाहिए- एक ने कहा कि पूर्ण युद्ध केवल तभी संभव है जब भाजपा 400 सीटें जीते। आतंकी हमले और युद्ध ऐसे मुद्दे नहीं हैं जिन पर किसी को वोट और संसद में सीट मांगनी चाहिए। यह खतरनाक और अपमानजनक है- यह प्रतिक्रिया अति उत्साही, सहानुभूति रखने वालों और पार्टी के समर्थकों से आती है। ये लोग उस पार्टी को अधिक नुकसान पहुंचाते हैं जिसका वे

महामोक्ष

और बुरे में फर्क ही नहीं करती है। उसे बहलाने वाला कि अच्छे दिन आएंगे, नारी पर वार नहीं होगा, 15 लाख खाते में आएंगे, इतने करोड़ रोजगार हर साल मिलेंगे, मेरे शासन में जन्म लेना स मान जैसी बातें ही पसंद है!

यह सवाल पूछने वाला नहीं कि इतनी सरकारी नौकरियां खाली पड़ी हैं युवाओं को क्यों नहीं दी जा रहीं? करीब दस लाख तो केन्द्र सरकार ने 2023 में लोकसभा में माना था कि पद रिक्त पड़े हैं। और 2024 में राहुल ने कहा 30 लाख पद। जिन्हें उन्होंने भरने का वादा किया था। पूरे देश को जोड़ने वाली दो भारत यात्राएं की। लेकिन हमने उपर ही कहा कि नहीं लिख रहे। अगर खुद महसूस नहीं कर रहे तो लिखने से भी फायदा क्या? अभी तो एक महीना हुआ। पहलगाम की घटना को हुए। अगर वही भूल गए तो 11 साल का लेखा-जोखा लिखने से फायदा क्या? दोनों विदेश में थे। राहुल अमेरिका से दौरा छोड़कर लौटे।

सीधे सीडब्ल्यूसी की मीटिंग में। पहलगाम में मारे गए पर्यटकों के लिए शोक प्रस्ताव, मौन। शाम को इन्डिया गेट। केंडल लाइट लेकर श्रद्धांजलि। आल पार्टी मीटिंग में। जिसमें खुद प्रधानमंत्री नहीं आए। दो आल पार्टी मीटिंग हुईं। दोनों बार प्रधानमंत्री नहीं आए। राहुल कश्मीर गए। वहां घायलों से मिले। कानपुर गए। मृतक के परिवार से मिले। हरियाणा

के नरवाल परिवार से मिले और अभी पुंछ। प्रधानमंत्री कहां गए? कोई पूछने वाला नहीं? अगर यह मीडिया पूछने वाला होता तो मोदी के राष्ट्रवाद का सारा नरेटिव (झूठी कहानी) खतम हो जाता।

मगर यह मीडिया तो बीजेपी वाले कहते हैं कि राहुल पाकिस्तानी है तो उसे भी और बड़ा चढ़ाकर चलाते हैं। देश में इस समय सबसे बड़ा अपराधी गोदी मीडिया है। ट्रंप जो एक बार भी

पाकिस्तान को आतंकवादी नहीं कह रहा उससे कोई सवाल नहीं कर रहे। और राहुल जो पाकिस्तान, आतंकवाद, चीन सबसे सवाल कर रहा है उसे सारी घटनाओं का जि मेदार बताने की कोशिश कर रहे हैं।

लेकिन 11 साल में यह साफ हो गया कि इतनी कोशिशों, कहना चाहिए हर कोशिश के बाद भी यह राहुल को डरा, दबा नहीं पाए। तो क्या अब यथा प्रजा तथा राजा का मुहावरा बदलने का समय आ गया? यथा नेता तथा जनता होगा!

जनता भी राहुल के साथ उठ खड़ी होगी! जनता ऐसे ही होती रही है। इतिहास के हर मौके पर एक समय आता है जब जनता झूठ और भावनाओं के जाल से निकलकर सच और हि मत का रास्ता अर्ि तयार करती है। राष्ट्रवाद वही मुद्दा है जहां जनता मोदी से सबसे ज्यादा सफल होने की उ मीद करती थी। और वहीं उसे सबसे ज्यादा निराशा हुई है।



केंद्रीय ऊर्जा मंत्री ने चंडीगढ़ में किया उत्तरी राज्यों के क्षेत्रीय बिजली सम्मेलन का नेतृत्व

चंडीगढ़ : केंद्रीय विद्युत तथा आवास एवं शहरी कार्य मंत्री श्री मनोहर लाल ने शुक्रवार को चंडीगढ़ में उत्तर भारत के राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के साथ क्षेत्रीय बिजली सम्मेलन की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि भारत ने मई 2024 में रिकॉर्ड 250 गीगावॉट की अधिकतम मांग पूरी कर नया इतिहास रच दिया है और अब देश बिजली की कमी से आगे बढ़कर “बिजली में आत्मनिर्भर” राष्ट्र बन चुका है। सम्मेलन में हरियाणा, पंजाब, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर और राजस्थान के ऊर्जा मंत्रियों सहित संबंधित विभागों के सचिवों, विद्युत कंपनियों के वरिष्ठ अधिकारियों तथा अन्य महत्वपूर्ण प्रतिनिधियों ने

सीईटी का फर्जी पोर्टल बनाने का मामला : महिला समेत पांच गिरफ्तार

फतेहाबाद : हरियाणा में कॉमन एलिजिबिलिटी टेस्ट (सीईटी) के रजिस्ट्रेशन का फर्जी पोर्टल बनाने के आरोप में महिला समेत पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। पंचकुला पुलिस ने ये गिरफ्तारियां की हैं। इनमें तीन आरोपी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर और दो आरोपी कुरुक्षेत्र और फतेहाबाद के निवासी हैं। इनमें एक महिला भी शामिल है। शुक्रवार को हरियाणा स्टाफ सेलेक्शन कमीशन (एचएसएससी) के सदस्य भूपेंद्र चौहान ने बताया कि चार जून को फर्जी पोर्टल बनाने की सूचना मिली थी, जिस पर साइबर थाने में मामला दर्ज किया गया। उन्होंने बताया कि पोर्टल पर जो ओआर कोड था, वह बंद कर दिया गया है। साथ ही उस बैंक अकाउंट को भी फ्रीज कर दिया गया है, जिसमें पैसा जा रहा था और अब कोई उसमें से पैसे नहीं निकलवा पायेगा। पुलिस उपाधीक्षक सृष्टि गुप्ता ने बताया कि आरोपियों की उम्र 25 से 40 वर्ष के बीच है। ठगों ने 29 मई को सीईटी का फर्जी पोर्टल बनाया था। पोर्टल पर छात्रों से कुछ जरूरी जानकारी लेकर फीस जमा करवाई और रजिस्ट्रेशन दिखा दिया। इन्होंने 77 लोगों से 22 हजार रुपये ठगे।

कहीं विनाश का कारण ना बन जाएं हीट रिस्क का फैलाव

चंडीगढ़ : जलवायु परिवर्तन की दुश्वारियों में से एक देश और दुनिया के देशों में हीट रिस्क के व्यापक प्रभाव से आसानी से समझा जा सकता है। यदि हम भारत की ही बात करें तो 2011 से 2022 के दशक के अध्ययन के अनुसार देश में हीट रिस्क का दायरा बहुत अधिाक बढ़ गया है। मजे की बात यह है कि अब दिन की तुलना में रातें भी अधिक गर्म होने लगी है। इसका एक बड़ा कारण आज की भवन निर्माण विधि और शहरों में कंक्रीट का जंगल विकसित होना और अन्य के साथ ही इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद खासतौर से अत्यधिक उर्जा खपत वाले फ्रीज और कूलर की जगह लेते एयरकण्डीशनर भी एक है। घटते जंगल और आबादी का दबाव भी एक बड़ा कारण है। ऊर्जा के रूप में जो संसाधन उपयोग किये जा रहे हैं वे भी जलवायु परिवर्तन का प्रमुख कारक बन रहे हैं। काउंसिल ऑन एनर्जी, एनवायरमेंट एण्ड वॉटर सीईईडब्ल्यू की हालिया रिपोर्ट अत्यधिक चिंतनीय और हालात की गंभीरता को दर्शाती है। रिपोर्ट की माने तो देश की तीन चौथाई

आगामी वित्तीय वर्ष के बजट में 50 वर्षों के लिए ब्याज मुक्त ऋण के रूप में ६.5 लाख करोड़ का प्रावधान किया है, जिसका उपयोग राज्य अपने पारेषण ढाँचे को सुदृढ़ करने में कर सकते हैं। केंद्रीय मंत्री ने यह भी स्पष्ट किया कि भारत नवीकरणीय ऊर्जा की दिशा में तेजी से अग्रसर है। वर्ष 2014 में कुल स्थापित क्षमता में अक्षय ऊर्जा की भागीदारी 32 प्रतिशत थी, जो अप्रैल 2025 तक बढ़कर 49 प्रतिशत हो चुकी है। उन्होंने राज्यों से आग्रह किया कि वे अपने हरित ऊर्जा गलियारों की योजनाओं को शीघ्र अंतिम रूप दें तथा नवीकरणीय ऊर्जा की खारीदी से संबंधित दिशा-निर्देशों को प्रभावी रूप से लागू करें। उन्होंने

विद्यार्थियों को मेवात छात्र प्रतिभा सम्मान योजना के रूप में दी जाएगी राशि : सैनी

चंडीगढ़ : हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी ने शुक्रवार को कहा कि मेवात क्षेत्र में बच्चों के शिक्षा स्तर में सुधार लाने के उद्देश्य से अब 10वीं व 12वीं कक्षाओं में 90 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले सामान्य व अन्य वर्ग के विद्यार्थियों को 51 हजार रुपए प्रति छात्र तथा अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों को एक लाख 11 हजार रुपए की प्रोत्साहन राशि मुख्यमंत्री मेवात छात्र प्रतिभा सम्मान योजना के रूप में दिए जाएंगे। सैनी ने आज मेवात विकास बोर्ड की 31वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए मेवात क्षेत्र के विकास

बनाकर लागत आधारित शुल्क निर्धारण तथा समय पर संशोधन करने की आवश्यकता पर भी बल दिया। सम्मेलन में विद्युत सचिव ने भी बल दिया कि वर्ष 2035 तक की अनुमानित मांग को अपनी स्रोत योजनाएँ तैयार कर आवश्यक उत्पादन क्षमताएँ विकसित करनी होंगी। इसके साथ ही पारेषण प्रणाली की सुदृढ़ता, साइबर सुरक्षा उपाय, स्मार्ट ग्रिड तथा भंडारण परियोजनाओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। श्री मनोहर लाल ने अंत में सभी राज्यों से अपील की कि वे “हर समय, सभी के लिए बिजली” के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु पूर्ण समर्पण एवं प्रतिबद्धता के साथ कार्य करें।

शराब ठेकेदार को जर्मनी से धमकाने का मामला : चार गिरफ्तार

हिसार : हरियाणा में हिसार जिले के हांसी क्षेत्र के सुल्तानपुर गांव में एक शराब ठेकेदार से जर्मनी से फोन कर धमकाने के मामले में पुलिस ने गुरुवार को चार आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने शुक्रवार को बताया कि आरोपियों के पास से एक पिस्तौल और कारतूस भी बरामद हुये हैं। शराब ठेकेदार संदीप को 31 मई की रात जर्मनी से फोन किया गया था। फोन करने वाले ने संदीप को आगामी शराब ठेकों की नीलामी में हिस्सा न लेने की चेतावनी दी और धमकाया। संदीप के अनुसार इससे पहले इसी प्रकार की धमकी उसके चाचा पवन को भी दी गयी थी, जिसमें फिरौती के रूप में हर सदस्य को 50 हजार प्रति माह देने की मांग की गयी थी। इस मामले

में पुलिस अधीक्षक अमित यशवर्धन के दिशा-निर्देश पर एक स्पेशल स्टाफ की विशेष टीम गठित कर मामले की जांच शुरू की गयी और मंजीत, दीपक और विकास नाम के दो युवकों को गिरफ्तार किया गया। आरोपियों के कब्जे से एक अवैध पिस्टल और कई कारतूस बरामद हुए हैं। पुलिस अब इस बात की जांच में जुटी है कि विदेश से की गयी कॉल के पीछे कौन मास्टरमाइंड है और गिरोह का संचालन कैसे हो रहा था। जर्मनी से आई ६ मकी भरी कॉल के बाद संदीप ने इस बार नीलामी में हिस्सा नहीं लिया। उसका कहना है कि इस कॉल के बाद वह डर गया था, जिस कारण उसने नीलामी में हिस्सा नहीं लिया। संदीप के अनुसार तीन जून को बोली किसी अन्य ठेकेदार ने छुड़वा ली है।

क्षेत्र में चल रहे राजकीय मॉडल संस्कृति स्कूल का संचालन शिक्षा विभाग के तत्वावधान में चल रहा है किंतु अब उनका सुपरविजन मेवात विकास प्राधिकरण द्वारा किया जाएगा। उन्होंने कहा कि गांव आकेरा में यूनानी मेडिकल कॉलेज की स्थापना के लिए नए टेंडर प्रक्रिया करते हुए जल्द निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि फिरोजपुर झिरका में मेवात मॉडल कॉलेज का निर्माण कार्य भी जल्द शुरू कराया जाएगा। वहीं गांव छपेड़ा में ड्राइविंग प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के भवन निर्माण प्रक्रिया इसी

साल अक्टूबर से शुरू हो जाएगी। उन्होंने बताया कि मेवात में शहीद हसन खां मेवाती के नाम से संग्रहालय का निर्माण किया जाएगा। नूंह जिला मुख्यालय पर 13.50 करोड़ रुपए की लागत से खेल परिसर का निर्माण कार्य करने को बैठक में मंजूरी दी गई है। वहीं नूंह में आडिटोरियम का निर्माण करने, तावडू ब्लॉक में स्वयं सहायता समूह की स्वयंसेविका महिलाओं के लिए हुनर हाट की स्थापना करने, मेवात मॉडल स्कूल फिरोजपुर झिरका में बालिका छात्रावासों में 2 ट्रांजिट छात्रावास की स्थापना करने की मंजूरी दी।

अब अधिक दोचार होना पड़ रहा है। अमेरिक का फर्नेस क्रीक सबसे अधिक गर्म स्थान है तो ट्यूनिशिया का केबिली, कुवैत का मित्रिबाह, ईरान का अहबाज और लुट रेगिस्तान, चीन का पलेमिंग आदि स्थान ऐसे हैं जो सर्वाधिक गर्मी वाले स्थान हैं। इसके साथ ही मौसम के मिजाज में भी बदलाव आया है। सर्दी में गर्मी और गर्मी में सर्द रात जैसे व असमय आंधी बरसात आम होती जा रही है। गर्मी के दिन बढ़े हैं। फरवरी तक अब अपनी परंपरागत मौसम का दायरा छोड़ते हुए अत्यधिक गर्मी वाले महीनों में से एक होने लगा है। आखिर यह मौसम का बदलाव भावी संकट की ओर साफ साफ इशारा कर रहा है। समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है। ग्लेशियर तेजी से पिघलने लगे हैं। समुद्र किनारे के शहरों के सामने अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया है। अब डूबने का डर सताने लगा है। अमेरिका ही नहीं दुनिया के अन्य देशों के जंगलों में जिस तेजी से आग की घटनाएं बढ़ रही हैं वह अपने आप में अलग चुनौती होती जा रही है। बीमारियों का असर बढ़ रहा है। हालात

गंभीर होते जा रहे हैं। हीट रिस्क के बढ़ते दायरे को देखते हुए आज हीट एक्शन प्लान बनाये जाने लगे हैं। हालांकि कि यदि केवल सामान्य नागरिकों के बढ़ती गर्मी के कारण होने वाले प्रभाव पर ही बात की जाए तो गर्मी बीमारियों का प्रमुख कारण बनती जा रही है। कई मिलियन मौतों का कारण हीट वेव है। निर्जलीकरण तो एक प्रमुख कारण है ही इसके साथ ही कार्डियोरेस्पिरेटरी के मामलें आम होते जा रहे हैं। अनिद्रा, तनाव, श्वास लेने में परेशानी, दस्त, पेट दर्द, फूड पोजेजिंग और तापघात आदि बीमारियों का प्रकोप लूताप के कारण दुनिया के देशों में बढ़ता जा रहा है। जिस तेजी से हीट रिस्क का विस्तार होता जा रहा है उससे आने वाले समय में और अधिक गंभीर हालातों का सामना करना पड़ेगा। किसी समय भारतीय परंपरा के अनुसार नौतपा ऐसा समय होता था जब सबसे अधिक गर्मी पड़ती थी। यह भी माना जाता था कि जितना अधिक नौतपा प्रभावी रहेगा उतना ही अच्छी बरसात होगी।

जगतसिंहपुर में लापरवाही से खुदाई के कारण गैस पाइपलाइन क्षतिग्रस्त हो गई

जगतसिंहपुर १९/१० (संवाददाता): जगतसिंहपुर शहर में अंडरग्राउंड पाइपलाइन नेटवर्क से गैस लीक होने की कई घटनाओं ने निवासियों में डर और गुस्सा पैदा कर दिया है।

नागरिक और सरकारी एजेंसियों के लिए काम करने वाले ठेकेदारों द्वारा लापरवाही से की गई खुदाई को ऐसी रोकी जा सकने वाली दुर्घटनाओं का कारण बताया जा रहा है। शुक्रवार को, वार्ड नंबर 6 के ओहल गांव में सड़क निर्माण में लगे मजदूरों ने कथित तौर पर एक गैस पाइपलाइन को नुकसान पहुंचाया और घटना की रिपोर्ट किए बिना उसे मिट्टी से ढक दिया। जब एक शादी के जुलूस के दौरान पटाखे



फोड़ने से लीक हुई गैस में आग लग गई, तो दहशत फैल गई। भारत गैस रिसोर्सेज लिमिटेड (इन्फ्रैस्ट्र) के इंजीनियर मौके पर पहुंचे और लीकेज को ठीक किया।

एक और घटना में, बिजली का खंभा लगाते समय एक पाइपलाइन क्षतिग्रस्त हो

गई। रिपोर्ट्स के मुताबिक, ये लीकेज इन्फ्रैस्ट्र जगतसिंहपुर नगर पालिका और अन्य एजेंसियों द्वारा नियुक्त ठेकेदारों द्वारा सड़क निर्माण, नाली के काम, ट्यूबवेल लगाने और बिजली के खंभे लगाने के दौरान हो रहे हैं। सूत्रों ने बताया कि इन्फ्रैस्ट्र ने उपभोक्ताओं के

साथ-साथ छह स्टेशनों को गैस सप्लाई करने के लिए पारादीप से जगतसिंहपुर तक अंडरग्राउंड गैस पाइपलाइन बिछाई है। काम पूरा होने के साथ, 7,000 के लक्ष्य के मुकाबले नगर पालिका सीमा के तहत लगभग 1,200 घरों को कनेक्शन दिए गए हैं।

चूंकि पाइपलाइन नेटवर्क कई नगर पालिका सड़कों के नीचे से गुजरता है, इसलिए इन्फ्रैस्ट्र ने पेट्रोलिंग टीमों को तैनात करके, रूट मार्कर और प्लेट इंडिकेटर लगाकर कई सुरक्षा उपाय अपनाए हैं। इन्फ्रैस्ट्र के साइट इंजीनियर शुभेंदु मटिया ने कहा कि लीकेज अनाधिकृत खुदाई के कारण हुए हैं। उन्होंने कहा, हमने खुदाई से पहले डायल करें संदेशों के साथ सुरक्षा मार्कर और टोल-फ्री नंबर लगाए हैं और सभी संबंधित विभागों को गैस पाइपलाइन के पास मैन्युअल खुदाई सुनिश्चित करने के लिए लिखित निर्देश जारी किए हैं। वार्ड नंबर 6 में लीकेज को सफलतापूर्वक ठीक कर दिया गया है।

नुआगांव प्रखंड में आरएसपी की स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर से 230 से अधिक ग्रामीण लाभान्वित



राउरकेला १९/१० (संवाददाता): राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) द्वारा नुआगांव प्रखंड के फुलझर गाँव स्थित सरकारी यू.पी. स्कूल में एक बहुआयामी स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर आरएसपी के निगमित सामाजिक दायित्व (सीएसआर) विभाग द्वारा चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा विभाग के सहयोग से आयोजित किया गया। मुख्य चिकित्सा अधिकारी प्रभारी (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा), डॉ. जयंत कुमार आचार्य, महाप्रबंधक प्रभारी (सीएसआर), सुश्री मुनमुन मित्रा, महाप्रबंधक (सीएसआर), श्री बी मलिक, उप महाप्रबंधक (सीएसआर), श्री आर एस बाड़ा, उप

महाप्रबंधक (सीएसआर), श्री टी बी टोप्पो, सहायक महाप्रबंधक (सीएसआर), श्री बी जेना, उप प्रबंधक (सीएसआर), श्री एस के सुकुला तथा अन्य अधिकारियों ने शिविर स्थल का दौरा किया और ग्रामीणों से बातचीत की। शिविर में आरएसपी के जिन चिकित्सकों ने रोगियों की जाँच की, उनमें डॉ. ज्योति रंजन साहू (शल्यचिकित्सा), डॉ. बी. एस. रायचौधरी (स्त्री रोग), डॉ. देबाशीष राय (मेडिसिन), डॉ. अनिदिता देबता (नेत्र रोग), डॉ. अविलाश साहू (बाल रोग) और डॉ. गीतांशु सैनी (नेत्र रोग) शामिल थे। सुश्री सीपीएसके के श्री लिंगराज प्रधान, फार्मासिस्ट, सुश्री बनीता जाह्नवी, सुश्री पूर्णिमा ठाकुर और

सीएसआर समन्वयक, श्री बी. के. महापात्र ने चिकित्सक टीम को जरूरी सहायता प्रदान की। शिविर में कुल 233 मरीजों की जाँच की गई और उन्हें निःशुल्क दवाइयाँ एवं परामर्श प्रदान किये गए। इसके अतिरिक्त, 12 मरीजों को विभिन्न सीएसआर योजनाओं के अंतर्गत इस्पात जनरल अस्पताल में आगे के उपचार के लिए चुना गया। उल्लेखनीय है कि, आरएसपी द्वारा पार्श्वांचल ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित किए जा रहे ऐसे चिकित्सा शिविर न केवल दूरस्थ गांवों में रहने वाले लोगों तक स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाते हैं, बल्कि गंभीर बीमारियों से पीड़ित रोगियों को इस्पात जनरल अस्पताल में महंगे शल्य चिकित्सा उपचार की निःशुल्क उपलब्ध कराते हैं।

नेता बीजेपी में शामिल होने के लिए आज़ाद हैं- सोनिया गांधी को मोकिम के पत्र पर भक्त का बयान

भुवनेश्वर १९/१० (संवाददाता): मोहमद मोकिम के सोनिया गांधी को लिखे लेटर के कुछ दिनों बाद, जिसमें उन्होंने पार्टी की गिरती हालत के लिए खुद को, नेशनल कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी को जिम्मेदार ठहराया था, ओडिशा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भक्त चरण दास ने रविवार को कहा कि वह पार्टी छोड़ने और इच्छुक में शामिल होने के लिए आज़ाद हैं। मोकिम के लेटर पर प्रतिक्रिया देते हुए दास ने कहा कि कोई भी खड़गे और राहुल के नेतृत्व पर सवाल नहीं उठा सकता। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष



राहुल ने पूरे देश में पार्टी को फिर से मजबूत करने के लिए कड़ी मेहनत की है, जिसकी वजह से आज पार्टी के पास 99 सांसद हैं। उनके नेतृत्व पर सवाल उठाना बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। इसी तरह, खड़गे ने अपनी कड़ी मेहनत से कांग्रेस नेताओं के सामने एक मिसाल कायम की है और युवा नेता

भी उनके जोश का मुकाबला नहीं कर सकते, दास ने कहा। इस बीच, इच्छुक की अनुशासन समिति ने सोनिया गांधी को मोकिम के लेटर के सार्वजनिक होने के बाद की स्थिति पर, दृष्ट को एक रिपोर्ट सौंपी है। सूत्रों ने बताया कि इच्छुक अध्यक्ष सोमवार को भुवनेश्वर लौटने से पहले नई दिल्ली में पार्टी अध्यक्ष और अन्य वरिष्ठ नेताओं से मिल सकते हैं। उन्होंने कहा कि अगले हफ्ते मोकिम के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई होने की संभावना है।

नवीन का सैलरी

भुवनेश्वर १९/१० (संवाददाता): विपक्ष के नेता और इच्छुक अध्यक्ष नवीन पटनायक के विधायकों के लिए मंजूर बढी हुई सैलरी और सुविधाओं को छोड़ने और मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी से इसे गरीबों के कल्याण के लिए इस्तेमाल करने के अनुरोध पर इच्छुक और कांग्रेस ने कड़ी आलोचना की है।

सजाधारी और विपक्षी दोनों पार्टियों ने नवीन के फैसले को एक दिखावा बताया, जो इच्छुक के दोहरे मापदंडों को दिखाता है। इच्छुक विधानसभा में विधायकों द्वारा सर्वसम्मति से लिए गए फैसले का हिस्सा थी और अब नवीन का बढ़ोतरी को स्वीकार करने से इनकार करना सिर्फ एक राजनीतिक दिखावा है, उन्होंने कहा।

उपमुख्यमंत्री कनक वर्धन सिंह देव ने कहा कि विपक्ष के नेता के तौर पर, नवीन बिल पेश होने पर सदन में इसका विरोध कर सकते थे। उन्होंने न तो चर्चा में हिस्सा

हाइक ठुकराना सिर्फ एक राजनीतिक हथकंडा है-बीजेपी और कांग्रेस



लिया और न ही विधानसभा में इस मुद्दे पर बहस के दौरान कोई आपत्ति जताई।

जब उनकी पार्टी ने बिल को पूरा समर्थन दिया, तो आप नवीन के फैसले को ज़्या कहेंगे? सिंह देव ने सवाल किया। संबलपुर के विधायक और वरिष्ठ इच्छुकनेता जयनारायण मिश्रा ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री को अपने पिता का अनुसरण करते हुए अपनी पूरी सैलरी छोड़ देनी चाहिए थी।

बीजू बाबू सिर्फ एक रुपया सैलरी लेते थे। नवीन बाबू उनके उदाहरण का पालन कर सकते थे और इस सिद्धांत को इच्छुक के सभी सदस्यों पर लागू कर सकते थे। यह सिर्फ

झूमा है। लेकिन कोई इस पर विश्वास नहीं कर रहा है, मिश्रा ने टिप्पणी करते हुए कहा कि विपक्ष के नेता बहुत अमीर आदमी हैं और उन्हें सैलरी की ज़रूरत नहीं है।

मिश्रा ने कहा कि अगर नवीन ने शीतकालीन सत्र के आखिरी दिन भी बिल का विरोध किया होता, तो सरकार इसे वापस ले लेती। इच्छुक की मुख्य सचेतक प्रमिला मल्लिक सैलरी बढ़ोतरी की मांग कर रही थीं। ज़्याा उन्होंने नवीन बाबू की सहमति या मंजूरी के बिना ऐसा किया होगा? मिश्रा ने पूछा। इसी तरह के विचार व्यक्त करते हुए, कांग्रेस विधायक पवित्र साउंता ने बढी हुई सैलरी

हालांकि, कांग्रेस विधायक ने तर्क दिया कि पूर्व और वर्तमान विधायकों के लिए सैलरी बढ़ोतरी बहुत ज़रूरी थी जो विज्ञाय कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। आलोचना का जवाब देते हुए, इच्छुक विधायक गणेश्वर बेहरा ने स्पष्ट किया कि नवीन ने पार्टी

औद्योगिक परिवेश

राउरकेला १९/१० (संवाददाता): विश्व ध्यान दिवस की पूर्व संध्या पर गोपबंधु सभागार में "औद्योगिक परिवेश में सफल जीवन कैसे जिएँ", विषय पर एक आध्यात्मिक प्रवचन का आयोजन किया गया। डिवाइन लाइफ सोसाइटी के उपाध्यक्ष, स्वामी निर्लिसानंद सरस्वती महाराज इस सत्र के मुख्य वक्ता थे। कार्यक्रम में कार्यपालक निदेशक (खान विकास-सीएलएमओ), श्री बी के गिरि, कार्यपालक निदेशक (संकार्य), श्री बी आर पलाई, कार्यपालक निदेशक (खान- ओडिशा खान समूह, सीएमएलओ), श्री एम पी सिंह सहित अनेक वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मियों ने भाग लिया। अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में स्वामी निर्लिसानंद जी ने आध्यात्मिकता के माध्यम से मानसिक शांति और सच्चे आनंद की प्राप्ति पर गहन प्रकाश



डाला। भगवद्गीता और उपनिषदों की शिक्षाओं का उल्लेख करते हुए उन्होंने जीवन की नश्वरता को समझने तथा अत्यधिक आसक्ति को त्यागने का संदेश दिया। स्वामीजी ने श्रोताओं के साथ संवाद करते हुए आध्यात्मिक दर्शन से जुड़े कई सामान्य और जटिल प्रश्नों के उत्तर भी दिए, जिनमें शामिल थे कर्म% (कार्य और परिणाम) की प्रकृति, %पुनर्जन्म% की अवधारणा,

%ईश्वर की सर्वव्यापिता % और जीवन, उद्देश्य और अस्तित्व से संबंधित अन्य समान विषय। सत्र का समापन एक व्यावहारिक प्रदर्शन के साथ हुआ, जिसमें स्वामीजी ने ध्यान करने का सही तरीका सिखाया और फिर दर्शकों को एक निर्दिष्ट ध्यान सत्र करवाया।

उल्लेखनीय है कि, स्वामी निर्लिसानंद सरस्वती महाराज, जिन्हें पूर्व में श्री सुनील पटनायक के नाम से जाना जाता

ग्लोबल वीज़ा एप्लीकेशन सेंटर स्थापित किया जाएगा

भुवनेश्वर १९/१० (संवाददाता): शहर में जल्द ही एक ग्लोबल वीज़ा एप्लीकेशन सेंटर होगा, जिससे इंटरनेशनल वीज़ा चाहने वाले लोगों को काफी सुविधा मिलेगी। ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने राज्य की राजधानी में यह सुविधा स्थापित करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे

दी है। प्रस्तावित वीज़ा सेंटर भुवनेश्वर के बारामुंडा में बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बस टर्मिनल बिल्डिंग से काम करेगा। ओडिशा सरकार सेंटर के लिए लगभग 3,000 वर्ग फुट ज़मीन देगी। फिलहाल, ओडिशा के निवासियों को विदेश यात्रा के लिए वीज़ा से जुड़े काम पूरे करने के लिए

कोलकाता, दिल्ली या हैदराबाद जाना पड़ता है। इस मांग को देखते हुए मुख्यमंत्री ने प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। एक बार चालू होने के बाद, ग्लोबल वीज़ा एप्लीकेशन सेंटर से ओडिशा के निवासियों के लिए वीज़ा आवेदन प्रक्रिया ज़्यादा आसान और सुविधाजनक होने की उम्मीद है।